संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

मासिक पत्रिका

मूल्य : ₹ ६ भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ सितम्बर २०१६
वर्ष : २६ अंक : ३
(निरंतर अंक : २८५)
पृष्ठ संख्या : ३२+४
(आवरण पृष्ठ सहित)

३ वर्ष से बापूजी के ऊपर हो रहे अन्याय के कारण करोड़ों लोग दुःखी

* बापूजी की निर्दोषता के अनेकों प्रमाण
* फँसाने हेतु किये गये षड्यंत्रों की खुली पोल
* ७९ वर्ष की उम्र, दिनोंदिन बिगड़ता स्वास्थ्य...

फिर भी निर्दोष बापूजी को जेल क्यों ?

निर्दोष बापूजी को रिहा करो !

"प्रायः ट्रायल (विचारण) में कई वर्ष लग जाते हैं और अगर अभियुक्त को जमानत नहीं दी जाती व आखिर में वह निर्दोष छूट जाता है तो उसके जीवन के इतने वर्ष जो उसने जेल में बिताये, उन्हें कौन वापस कर सकता है ?"

– सर्वोच्च न्यायालय

पूज्य बापूजी का ५३वाँ आत्मसाक्षात्कार दिवस : २ अक्टूबर
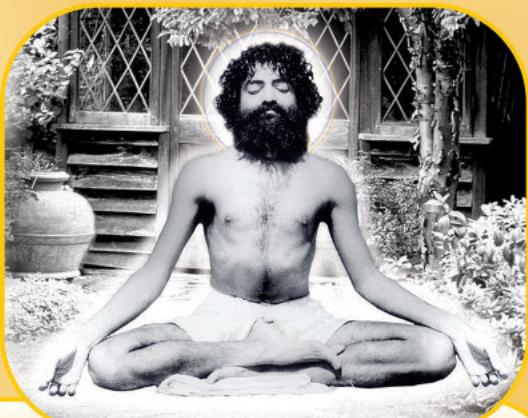
पृष्ठ १२

महाशत्रु कौन और जीवन में विजय कैसे पायें ?
(दशहरा : ११ अक्टूबर)

पृष्ठ ११

आयु, पुत्र, यश, स्वर्ग, पुष्टि, धन-धान्य देनेवाला श्राद्ध-कर्म
(श्राद्ध पक्ष : १६ से ३० सितम्बर)

पृष्ठ २२

देशभर में महिला उत्थान मंडलों द्वारा कारागृहों में मनाया गया रक्षाबंधन पर्व

गुरदासपुर (पंजाब) | औरंगाबाद (महा.) | नवसारी (गुज.)

पाटण (गुज.) | कलबुर्गी (कर्नाटक) | जालंधर (पंजाब)

धमतरी (छ.ग.) | बड़ौदा (गुज.) | बाड़मेर (राज.)

नंदुरबार (महा.) | रायपुर (छ.ग.) | सोलन (हि.प्र.)

झाँसी (उ.प्र.) | जामनगर (गुज.) | मंदसौर (म.प्र.)

नेपाल में जारी हैं निःशुल्क चिकित्सा शिविर, योग-प्रशिक्षण तथा नशामुक्ति व सत्संग कार्यक्रम

मधुटार, जि. सिंधुली | जोगडा, जि. रुपंदेही | खजानी, जि. बारा

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।

आखिर क्यों हम सुनी-सुनायी बातों पर विश्वास कर लेते हैं ? देखें एवं औरों को दिखायें यह आँखों देखी सच्चाई

लघु फिल्म **'ASHRAM'** The Truth Behind The Lies

इस फिल्म को आप इंटरनेट लिंक http://goo.gl/fJ7Pd1 पर देख सकते हैं।
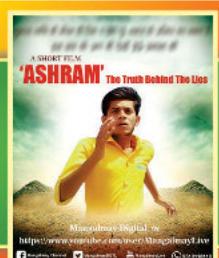
ऋषि प्रसाद

मासिक पत्रिका

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगू, कन्नड, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी (देवनागरी) व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २६ अंक : ३ मूल्य : ₹ ६

भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २८५)

प्रकाशन दिनांक : १ सितम्बर २०१६

पृष्ठ संख्या : ३२+४ (आवरण पृष्ठ सहित)

भाद्रपद-आश्विन वि.सं. २०७३

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम

प्रकाशक : धर्मेश जगराम सिंह चौहान

मुद्रक : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा

प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)

मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५

सम्पादक : श्रीनिवास र. कुलकर्णी

सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा

संरक्षक : श्री जमनादास हलाटवाला

सम्पर्क पता :

'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)

फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८

केवल 'ऋषि प्रसाद' पूछताछ हेतु : (०७९) ३९८७७७४२

Email : ashramindia@ashram.org

Website : www.ashram.org

www.rishiprasad.org

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित) भारत में

अवधि	हिन्दी व अन्य	अंग्रेजी	सिंधी व सिंधी (देवनागरी)
वार्षिक	₹ ६०	₹ ७०	₹ ३०
द्विवार्षिक	₹ १००	₹ १३५	₹ ५५
पंचवार्षिक	₹ २२५	₹ ३२५	₹ १२०
आजीवन	₹ ५००	----	₹ २९०

विदेशों में (सभी भाषाएँ)

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ३००	US $ 20
द्विवार्षिक	₹ ६००	US $ 40
पंचवार्षिक	₹ १५००	US $ 80

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('ऋषि प्रसाद' के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।

(गतांक से आगे)

त्रिकाल संध्या से लाभ

पूज्य बापूजी त्रिकाल संध्या से होनेवाले लाभों को बताते हुए कहते हैं कि ''त्रिकाल संध्या माने हृदयरूपी घर में तीन बार साफ-सफाई । इससे बहुत फायदा होता है।

त्रिकाल संध्या करने से -

(१) अपमृत्यु आदि से रक्षा होती है और कुल में दुष्ट आत्माएँ, माता-पिता को सतानेवाली आत्माएँ नहीं आतीं।

(२) किसीके सामने हाथ फैलाने का दिन नहीं आता। रोजी-रोटी की चिंता नहीं सताती।

(३) व्यक्ति का चित्त शीघ्र निर्दोष एवं पवित्र हो जाता है । उसका तन तंदुरुस्त और मन प्रसन्न रहता है तथा उसमें मंद व तीव्र प्रारब्ध को परिवर्तित करने का सामर्थ्य आ जाता है । वह

तरतीव्र प्रारब्ध के उपभोग में सम एवं प्रसन्न रहता है । उसको दुःख, शोक, 'हाय-हाय' या चिंता अधिक नहीं दबा सकती।

(४) त्रिकाल संध्या करनेवाली पुण्यशीला बहनें और पुण्यात्मा भाई अपने कुटुम्बियों एवं बच्चों को भी तेजस्विता प्रदान कर सकते हैं।

(५) त्रिकाल संध्या करनेवाले माता-पिता के बच्चे दूसरे बच्चों की अपेक्षा कुछ विशेष योग्यतावाले होने की सम्भावना अधिक होती है।

(६) चित्त आसक्तियों में अधिक नहीं डूबता। उन भाग्यशालियों के संसार-बंधन ढीले पड़ने लगते हैं।

(७) ईश्वर-प्रसाद पचाने का सामर्थ्य आ जाता है।

(८) मन पापों की ओर उन्मुख नहीं होता तथा पुण्यपुंज बढ़ते ही जाते हैं।

(९) हृदय और फेफड़े स्वच्छ व शुद्ध होने लगते हैं।

(१०) हृदय में भगवन्नाम, भगवद्भाव अनन्य भाव से प्रकट होता है तथा वह साधक सुलभता से अपने परमेश्वर को, सोऽहम् स्वभाव को, अपने आत्म-परमात्मरस को यहीं अनुभव कर लेता है।

(११) जैसे आत्मज्ञानी महापुरुष का चित्त

आकाशवत् व्यापक होता है, वैसे ही उत्तम प्रकार से त्रिकाल संध्या और आत्मज्ञान का विचार करनेवाले साधक का चित्त विशाल होते-होते सर्वव्यापी चिदाकाशमय होने लगता है।

ऐसे महाभाग्यशाली साधक-साधिकाओं के प्राण लोक-लोकांतर में भटकने नहीं जाते। उनके प्राण तो समष्टि प्राण में मिल जाते हैं और वे विदेहमुक्त दशा का अनुभव करते हैं।

(१२) जैसे पापी मनुष्य को सर्वत्र अशांति और दुःख ही मिलता है, वैसे ही त्रिकाल संध्या करनेवाले साधक को सर्वत्र शांति, प्रसन्नता, प्रेम तथा आनंद का अनुभव होता है।

(१३) जैसे सूर्य को रात्रि की मुलाकात नहीं होती, वैसे ही त्रिकाल संध्या करनेवाले में दुश्चरित्रता टिक नहीं पाती।

(१४) जैसे गारुड़ मंत्र से सर्प भाग जाते हैं, वैसे ही गुरुमंत्र से पाप भाग जाते हैं और त्रिकाल संध्या करनेवाले शिष्य के जन्म-जन्मांतर के कल्मष, पाप-ताप जलकर भस्म हो जाते हैं।

आज के युग में हाथ में जल लेकर सूर्यनारायण को अर्घ्य देने से भी अच्छा साधन मानसिक संध्या करना है। इसलिए जहाँ भी रहें, तीनों समय थोड़े-से जल से आचमन करके त्रिबंध प्राणायाम करते हुए संध्या आरम्भ कर देनी चाहिए तथा प्राणायाम के दौरान अपने इष्टमंत्र, गुरुमंत्र का जप करना चाहिए।

(१५) त्रिकाल संध्या व त्रिकाल प्राणायाम करने से थोड़े ही सप्ताह में अंतःकरण शुद्ध हो जाता है। प्राणायाम, जप, ध्यान से जिनका अंतःकरण शुद्ध हो जाता है उन्हींको ब्रह्मज्ञान का रंग जल्दी लगता है।

पाप-ताप मिटाने का सरल उपाय

मुसलमान ५ वक्त की नमाज पढ़ते हैं और हिन्दुओं को ३ समय संध्या करने का विधान है। जब से हिन्दू संध्या भूल गये, तब से बीमारियाँ, अशांति और पातक बढ़ गये। मुसलमान लोग नमाज पढ़ने में इतना विश्वास रखते हैं कि वे चालू दफ्तर में से भी समय निकालकर नमाज पढ़ने चले जाते हैं जबकि हम लोग आज पश्चिम के मैले कल्चर तथा नश्वर संसार की नश्वर वस्तुओं को प्राप्त करने की होड़-दौड़ में संध्या करना बंद कर चुके हैं या भूल चुके हैं। शायद ही २-३ प्रतिशत लोग नियमित रूप से संध्या करते होंगे।

त्रिकाल संध्या इसीलिए करवायी जाती थी और लोग करते थे कि सुबह की संध्या में ध्यान, प्राणायाम, जप, आचमन, तर्पण, मुद्राएँ आदि जो किया जाता है वह तन-मन के स्वास्थ्य की रक्षा करता है। रात्रि में अनजाने में हुए दोष सुबह की संध्या से दूर होते हैं। सुबह से दोपहर तक कहीं इधर-उधर मन या तन भटक गया तो वे दोष दोपहर की संध्या से और दोपहर के बाद अनजाने में हुए दोष शाम की संध्या करने से नष्ट हो जाते हैं तथा अंतःकरण पवित्र होने लगता है। इसीलिए ऋषि-मुनियों ने त्रिकाल संध्या की व्यवस्था की थी।

आजकल लोग संध्या करना भूल गये हैं जिससे जीवन में तमस बढ़ गया है और कई लोग पदार्थ-संग्रह के, निद्रा के सुख में लगे हैं। ऐसा करके वे अपनी जीवनशक्ति को नष्ट कर डालते हैं।

आप इतना तो अवश्य कर सकते हैं

आप लोग जहाँ भी रहें, त्रिकाल संध्या के समय हाथ-पैर धोकर तीन चुल्लू पानी पी के (आचमन करके) संध्या में बैठें और त्रिबंध प्राणायाम करें।

(शेष पृष्ठ ७ पर)
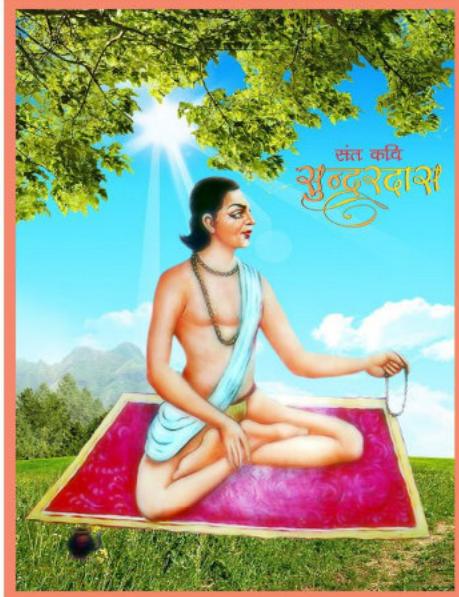
जग्गाजी से बने संत सुंदरदासजी

- पूज्य बापूजी

दौसा जिले के वैश्य की पुत्री सती ने दादू दयाल महाराज के शिष्य जग्गाजी महाराज को प्रणाम किया तो जग्गाजी ने दोनों हाथ उठाकर कहा : ''पुत्रवती भव।''

दादूजी को पता चला तो उन्होंने कहा : ''कैसा चेला है रे ! उसके भाग्य में तो पुत्र था नहीं और तूने 'पुत्रवती भव' बोल दिया। अब क्या करेगा ? संत आदमी ने वचन दिया है तो झूठा तो नहीं पड़ना चाहिए।''

जग्गाजी बोले : ''गुरु महाराज ! उपाय क्या है ?''

दादूजी बोले : ''यह शरीर छोड़ के उसके गर्भ से जन्म लेगा तभी तेरा वचन सच्चा होगा।''

उसने अनुसंधान किया और शरीर त्यागा, फिर वैश्य की पुत्री के गर्भ से बालक का जन्म हुआ। अब पिछले जन्म का तो वह दादू दयालजी का चेला था। जन्म हुआ तो बच्चा सुंदर और अंदर से सूझबूझवाला था। थोड़ा बोलने लायक हुआ तो कविता बोलने लगा। संयमी भी इतना, सत्संगी भी इतना, सुंदर भी इतना कि नाम पड़ा सुंदरदास। और उन सुंदरदास का रहना, कहना तो सुंदर लेकिन सत्संग भी बड़ा सुंदर ! सुंदरदासजी लिखते हैं :

गुरु बिन ज्ञान नहिं, गुरु बिन ध्यान नहिं,

ईंट, चूने, हाड़-मांस का ज्ञान तो इंजीनियर, डॉक्टर कोई भी दे देगा लेकिन आत्मा-परमात्मा का ज्ञान तो गुरु के द्वारा ही मिलेगा। 'तेरा-मेरा' ध्यान तो ठीक है लेकिन जिससे सारे ध्यान हो-हो के मिट जाते हैं फिर भी जो ज्यों-का-त्यों रहता है उस आत्मदेव का ध्यान तो गुरु के ज्ञान के बिना नहीं होता।

गुरु बिन आतम विचार न लहतु है।

गुरु के बिना आत्मा-परमात्मा का प्रकाश भी नहीं होता है। मरनेवाले शरीर को 'मैं' मानकर मरे जा रहे हैं। अरे, यह शरीर तो पाँच भूतों का है, तुम तो अमर आत्मा हो - यह ज्ञान गुरु के बिना नहीं मिलेगा। मूर्ख लोग कैसे हैं कि शरीर बीमार होता है तो बोलते हैं, 'मैं बीमार हूँ।' मन में दुःख आता है तो बोले, 'मैं दुःखी हूँ।' चित्त में चिंता आती है तो बोले, 'मुझे चिंता है।' चमड़ा काला हो गया तो बोले, 'मैं काला हो गया।' चमड़ा अगर गोरा हो गया तो बोले, 'मैं गोरा हो गया।' अरे, तू तो वही-का-वही है। यह तो शरीर बदलता है, तू नहीं बदलता ! लेकिन गुरु के बिना ज्ञान नहीं न ! सुंदरदासजी महाराज आगे लिखते हैं :

गुरु बिन प्रेम नहीं, गुरु बिन नेम नहिं,

गुरु के बिना भगवत्प्रेम भी नहीं जगता और भगवन्नाम, मंत्र-जप की माला करने का नेम (नियम) भी नहीं मिलता। गुरुजी नेम देते हैं तभी चले काम।

गुरु बिन सीलहु संतोष न गहतु है।

गुरु के सम्पर्क में आने से आत्मशांति होती है, संतोष होता है, मन पवित्र होता है। गुरु की दृष्टि पड़ती है तो पापनाश होते हैं। गुरु की वाणी सुनते हैं तो अभिमान मिटता है। गुरु का सत्संग और सान्निध्य व्यक्ति से सत्कर्म कराता है।

गुरु बिन प्यास नहिं, बुद्धि को प्रकास नहिं,

जब तक गुरु नहीं मिलते हैं तब तक भगवान को पाने की प्यास भी तो पैदा नहीं होती और गुरु के बिना बुद्धि को ज्ञान-प्रकाश भी नहीं मिलता।

भ्रमहू को नास नहिं, संसेई रहतु है।

मरनेवाले शरीर को 'मैं' मानते हो और वास्तविक जो तुम हो अमर आत्मा, उसका पता ही नहीं, यह स्थिति भ्रम कहलाती है। गुरु के ज्ञान के बिना भ्रम का नाश नहीं होगा। गुरु बताते हैं, 'बेटा! यह हाड़-मांस का शरीर तुम नहीं हो। दुःखी-सुखी होनेवाला मन तुम नहीं हो। बीमार पड़नेवाला और ठीक होनेवाला तन तुम नहीं हो। तुम इन सबको जाननेवाले हो, चैतन्य हो, अमर हो, विभु हो, व्यापक हो। यह शरीर मरनेवाला है। दुःख भी मरता है, सुख भी मरता है, मान-अपमान भी मरता है। बचपन मर गया, जवानी भी मर गयी।'

गुरु बिन बाट१ नहिं, कौड़ी२ बिन हाट३ नहिं,
'सुंदर' प्रकट लो, वेद यों कहतु है॥

वेद भगवान प्रकट होकर यह बात कहते हैं।

दादूजी महाराज के ये सत्पात्र शिष्य जग्गाजी महाराज बोल गये तो बाद में अपना वचन निभाकर सुंदर जीवन जिये और ९३ साल की उम्र में सांगानेर (राज.) में शरीर छोड़ा। सांगानेर में अभी भी उनकी समाधि है।

१. मार्ग २. धन ३. बाजार

****

(पृष्ठ ५ से 'बापूजी ने जीने का सही...' का शेष) अपने इष्टमंत्र, गुरुमंत्र का जप करें, २-५ मिनट शांत होकर फिर श्वासोच्छ्वास की गिनती करें और ध्यान करें तो बहुत अच्छा। त्रिकाल न कर सकें तो द्विकाल संध्या अवश्य करें।

लम्बा श्वास लें और हरिनाम का गुंजन करें। खूब गहरा श्वास लें नाभि तक और भीतर करीब २० सेकंड रोक सकें तो अच्छा है, फिर ओऽऽऽ...म्... इस प्रकार दीर्घ प्रणव का जप करें। ऐसा १०-१५ मिनट करें। कम समय में जल्दी उपासना सफल हो, जल्दी आनंद उभरे, जल्दी आत्मानंद का रस आये और बाहर का आकर्षण मिटे, यह ऐसा प्रयोग है और कहीं भी कर सकते हो, सबके लिए है, बहुत लाभ होगा। अगर निश्चित समय पर निश्चित जगह पर

करो तो अच्छा है, विशेष लाभ होगा। फिर बैठे हैं... श्वास अंदर गया तो ॐ या राम, बाहर आया तो एक... अंदर गया तो शांति या आनंद, बाहर आया तो दो... श्वास अंदर गया तो आरोग्यता, बाहर आया तो तीन... इस प्रकार अगर ५० की गिनती बिना भूले रोज कर लो तो २-४ दिन में ही आपको फर्क महसूस होगा कि 'हाँ, कुछ तो है।' अगर ५० की गिनती में मन गलती कर दे तो फिर से शुरू से गिनो। मन को कहो, '५० तक बिना गलती के गिनेगा तब उठने दूँगा।' मन कुछ अंश में वश भी होने लगेगा, फिर ६०, ७०... बढ़ाते हुए १०८ तक की गिनती का नियम बना लो। १ मिनट में १३ श्वास चलते हैं तो १०८ की गिनती में १० मिनट भी नहीं चाहिए लेकिन फायदा बहुत होगा। घंटोंभर क्लबों में जाने की जगह ८-१० मिनट का यह प्रयोग करें तो बहुत ज्यादा लाभ होगा।' (क्रमशः)

विकसित जीवन जीने की पद्धति देती गुरुकुल की शिक्षा

- पूज्य बापूजी

गुरुकुल-परम्परा से पढ़ाई हो यह देश का सौभाग्य होगा

जन्म से ७ साल तक मूलाधार केन्द्र, जो शरीर की नींव है, वह विकसित होता है। ७ से १४ साल की उम्र तक स्वाधिष्ठान केन्द्र विकसित होता है तथा १४ से २१ साल तक मणिपुर केन्द्र का विकास होता है, यह बुद्धि को विकसित करने के लिए स्वर्णकाल है। यह भावनाओं को दिव्य व सफल बनाने के लिए सटीक समय है।

गुरुकुल शिक्षा-पद्धति से जो विद्यार्थी पढ़ते-लिखते थे उनमें ओजस्विता-तेजस्विता आती थी। क्योंकि हमारे शरीर में सात केन्द्र (चक्र) हैं - मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत, विशुद्धाख्य, आज्ञा और सहस्रार; इन केन्द्रों के विकास करने की पद्धति गुरु लोग जानते थे। गुरु का मतलब है जो हमको लघु सुखों, लघु वासनाओं, लघु मान्यताओं से ऊपर उठा दें। इसलिए पहले दीक्षा दी जाती थी। जीवन को सही दिशा देने के लिए दीक्षा बहुत आवश्यक है। दीक्षा का मतलब यह नहीं कि केवल कान फूँक दिया अथवा किसीको माला पकड़ा दी, नहीं! ऊँची दिशा दी जाती थी कि 'खाना-पीना और इन्द्रिय-लोलुपता का सुख तो पशु-पक्षी, घोड़े-गधे, कुत्ते-बिल्ले भी पा लेते हैं, आपको ऊँचे-में-ऊँचा आत्म-परमात्म सुख लेना है। ऊँचा जीवन जीने के लिए बाहर का आडम्बर नहीं, आंतरिक विकास करो। दिखावटी जीवन की अपेक्षा सात्त्विक और दिव्य जीवन जियो। दूसरों के अधिकार की रक्षा और अपने बल का सदुपयोग करना।' जो दूसरों के अधिकार की रक्षा करता है और अपने बल का सदुपयोग करता है, वह निर्बलों की सहायता करेगा और अपने अधिकार व लोलुपता में आकर समाज की हानि नहीं करेगा, अपना भविष्य बरबाद नहीं करेगा।

गुरुकुलों से इस प्रकार के उत्तम संस्कारों से युक्त होकर विद्यार्थी जब समाज में आता था तो अच्छी व्यवस्था होती थी। गुरुकुल में जो शिक्षण मिलता था अथवा ज्ञान मिलता था वह आत्मशक्ति का विकास करता था। अभी मैकाले शिक्षा-पद्धति में क्या चल रहा है कि 'व्यक्तित्व का शृंगार करने के लिए हृदय अशुद्ध हो तो हो, वसूली के, घूस के, मिलावट के, हेराफेरी के पैसे आयें, दूसरा भूखा मरे, निर्धनों के बच्चे पढ़ें - न पढ़ें, गरीबों का शोषण होता हो तो हो लेकिन मेरे बेटे, मैं और मेरा परिवार सुविधा-सम्पन्न रहे।' इस छोटे-से दायरे में आदमी आ गया।

विदेशी और भारतीय पद्धति में यह अंतर है कि विदेश में अधिक-से-अधिक सत्ता, धन के ढेर जिसको मिल जायें, वह बड़ा आदमी माना जाता है जबकि भारत में जो अधिक-से-अधिक समाज को दे एवं अपनी जरूरतों हेतु कम-से-कम ले और अपने असली सुख में, आत्मसुख में आगे बढ़े, उसको बड़ा माना जाता है। जो कम वस्तु, कम सत्ता, कम

व्यक्तियों के उपयोग से अधिक-से-अधिक शांति, सुख पा सके और दूसरों को दे सके ऐसे शुकदेवजी महाराज ऊँचे सिंहासन पर बैठे हैं और राजा परीक्षित उनके चरणों में ! अष्टावक्रजी ऊँचे सिंहासन पर बैठे हैं और राजा जनक उनके चरणों में ! श्रीरामचन्द्रजी वसिष्ठ महाराज को ऊँचे सिंहासन पर बिठाते हैं और स्वयं उनके चरण धोते हैं । श्रीकृष्ण गुरु के चरण धोते हैं ।

तो गुरुकुल-पद्धति में गुरु सुख अर्थात् ऊँचा सुख, ऊँचा ज्ञान पाने और ऊँची समझ, शाश्वत सुख की मौलिक शिक्षा मिलती थी और अंदर के केन्द्रों का विकास होता था । अभी सूचनाएँ इकट्ठी करके हम लोग प्रमाणपत्र ले लेते हैं । मैकाले शिक्षा-पद्धति से पढ़े हुए मानवीय संवेदनाओं से वंचित विद्यार्थी बेचारे कई लाख रुपये रिश्वत दे के नौकरी लेते हैं और करोड़ों रुपये शोषित करके सुखी होने में लगते हैं । न वे सुखी, न जिनको शोषित किया वे सुखी, न जिनको रिश्वत देते हैं वे सुखी, न उनके सम्पर्क में आनेवाले सुखी ! तो चारों तरफ शोषण-ही-शोषण और दुःख-ही-दुःख बढ़ गया ।

बल का सदुपयोग यह नहीं कि आपके पास सत्ता का, साधुताई का बल है अथवा अन्य कोई बल है और उसके द्वारा आप दूसरों का शोषण करके बड़े बन जाओ । यह बल का दुरुपयोग है । दूसरों के अधिकार की रक्षा और अपने अधिकार का सदुपयोग । गुरुकुल-पद्धति उसी पर आधारित थी ।

आत्मा-परमात्मा का सुख लेने की पद्धति, इन्द्रियों को संयमित करने की और मन व इन्द्रियों को दिव्य ज्ञान में, दिव्य आत्मसुख में ले जाने की व्यवस्था गुरुकुलों में थी । इसमें जप, ध्यान और वैदिक ज्ञान बड़ी सहायता करता है ।

गुरुकुल शिक्षा-पद्धति व्यक्ति को विकसित जीवन जीने की पद्धति देती है । गुरुकुल-परम्परा से पढ़ाई-लिखाई हो तो देश का, मानवता का यह सौभाग्य होगा ।

साँईं श्री लीलाशाहजी की अमृतवाणी

* समस्त कर्म निष्काम भाव से करने से हृदय शुद्ध होता है, उसके पश्चात् परमात्म-ज्ञान प्राप्त होता है । भले ही समस्त काम, व्यवसाय आदि और सेवा करते रहो परंतु उन्हें स्वप्न की भाँति समझ के मोह-ममतारहित होकर करते रहना चाहिए । कभी पग पीछे न हटाने चाहिए, आगे-आगे बढ़ते रहना चाहिए, तब अवश्य ही लक्ष्य को प्राप्त करोगे । जिसका जैसा निश्चय होगा, उसे वैसा फल प्राप्त होगा ।

* स्मरण रखो कि जब काम-क्रोध से बचेंगे, तभी हममें शक्ति आयेगी । जैसे इंजन तथा अन्य यंत्रों में भाप को रोककर उससे कई कार्य लिये जाते हैं । उस अनुशासित भाप में बड़ी शक्ति होती है, खाली भाप में नहीं । इसी प्रकार यदि हम काम एवं क्रोध को रोक सकें तो हमारे भीतर भी महान शक्ति उत्पन्न होगी ।

* जैसे वृक्ष से कुछ पत्ते गिरते हैं तो कुछ नये पैदा होते हैं, वैसे यह संसार है । हम तो कभी मरते नहीं । हम न बुझनेवाली आत्मज्योति हैं ।

* स्मरण रखिये कि जब तक अहंकार है, तब तक श्रद्धा न होगी । किसमें ? जो सुन रहे हैं उस सत्संग में । यदि श्रद्धा न होगी और अहंकार होगा तो कल्याण न होगा । श्रद्धा के सिवाय कुछ लाभ न होगा परंतु श्रद्धा और बुद्धि के साथ विवेक होना चाहिए, नहीं तो लोग फँस जाते हैं । मन, बुद्धि और इन्द्रियों को वश में करोगे तो मन मुर्दा बनेगा । तुमने उपदेश तो सुना है लेकिन जब तक बुद्धि सूक्ष्म और शुद्ध नहीं हुई है, तब तक सच्ची बात समझ में न आयेगी ।

ज्ञान की वृत्ति से अघोर बन जाओ

- पूज्य बापूजी

मोकलपुर (उ.प्र.) के आसपास एक अघोरी बाबा रहते थे । वटवृक्ष के नीचे झोंपड़ी थी, बड़े विद्वान भी थे । वे रोज ३ मील दूर चले जाते हाँड़ी ले के और फिर घंटों के बाद आनंदित हो के आते । अखंडानंदजी ने पूछा कि "बाबा ! आप रोज कहाँ जाते हैं ?" बोले : "मैं उधर जाता हूँ; वहाँ मुझे श्रीरामचन्द्रजी के राज्याभिषेक के समय जो वातावरण निर्मित हुआ था, वह प्रत्यक्ष दिखता है और बड़ा आनंद आता है।"

उन अघोरी बाबा ने एक दिन बताया कि यह पृथ्वी अघोरी है; अघोर माना इसमें चाहे शुभ हो या अशुभ, चाहे इसमें गंदगी डालो, मल-मूत्र करो, चाहे फूल डालो, सब सह लेती है, सब अपने में समा लेती है । जल अघोर है । ब्राह्मण नहाये, कसाई नहाये, साधु नहाये गंगाजल में अथवा किसी जल में कोई कुछ भी करे, जल सब स्वीकार कर लेता है । वायु अघोर है । कैसी भी चीज हो, सबमें वायु का स्पर्श है । तेज अघोर है । अग्नि में कुछ भी डालो - घी डालो चाहे मिर्च डालो, लक्कड़ डालो चाहे मुर्दा डालो, चाहे कुछ भी डालो, सबके लिए अग्नि का खुला द्वार । ऐसे ही आकाश भी परम अघोर है । श्मशान भी आकाश में है, कब्रिस्तान भी आकाश में है और मंदिर भी आकाश में है, दुर्जन भी आकाश में, साधु-संत भी आकाश में । चोर भी आकाश में हैं, साहूकार भी आकाश में हैं । आकाश तत्त्व सबको धारण करता है ।

मन भी बड़ा अघोर है । मन में जहाँ काम आता है वहीं काम से होनेवाले दुष्परिणाम का विवेक भी आता है । कई बार मन में क्रोध आता है तो कई बार शांति आती है, कई बार कंजूसी आती है तो कई बार उदारता आती है, कई बार मित्र आते हैं तो कई बार शत्रु भी आ जाते हैं मन में । ऐसे ही बुद्धि भी अघोर है । बुद्धि में भी द्वन्द्व होता रहता है । शुभ निर्णय भी होते हैं, अशुभ भी होते हैं । 'मैं लाचार हूँ, मैं गरीब हूँ, मैं स्त्री हूँ, मैं पुरुष हूँ, मेरा कोई नहीं है...' - ऐसा भी आता है और 'मैं चैतन्यस्वरूप हूँ, अपने भाग्य का आप विधाता हूँ...' - ऐसा भी आता है ।

आत्मा अघोर है । वह अच्छे-बुरे में एक है । अच्छाई-बुराई संस्कार-विकार से बनती है । वह किसी भी

(शेष पृष्ठ १२ पर)

महाशत्रु कौन और जीवन में विजय कैसे पायें ?

(दशहरा : ११ अक्टूबर) - पूज्य बापूजी

विजयादशमी को रावण को मारकर श्रीराम विजेता हुए थे । महिषासुर आदि राक्षसों को मारकर माताजी ने धरती का बोझा हलका किया था । विजयादशमी से हमें यह संदेशा मिलता है कि भौतिकवाद भले कितना भी बढ़ा-चढ़ा हो, अधार्मिक अथवा बहिर्मुख आदमी के पास कितनी भी सत्ताएँ हों, कितना भी बल हो फिर भी अंतर्मुख व्यक्ति डरे नहीं, उसकी विजय जरूर होगी ।

१० आदमियों जितने जिसके मस्तक और भुजाएँ थीं ऐसे रावण के समस्त सैन्य-बल को भी छोटे-छोटे बंदर-भालुओं ने ठिकाने लगा दिया ।

यह दशहरा तुम्हें संदेश देता है कि जो प्रसन्नचित्त है, पुरुषार्थी है उसे ही विजय मिलती है । जो उत्साहित है, कार्यरत है, जो हजार विघ्नों पर भी चिंतित नहीं होता, हजार दुश्मनों से भी भयभीत नहीं होता वह महादुश्मन - जन्म-मरण के चक्कर को भी तोड़कर फेंक देता है । छोटे-छोटे दुश्मन को मारना कोई बड़ी बात नहीं है, अपने और ईश्वर के बीच में जो अविद्या का पर्दा है, उसको जब तक नहीं हटाया तब तक दुनिया के सब शत्रुओं को हटा दो, कोई फर्क नहीं पड़ता । दुनिया के शत्रु ज्यों-के-त्यों मौजूद रहें, उनकी चिंता मत करो । महाशत्रु जो अज्ञान है उसको तुम हटा दो, फिर पता चलेगा कि शत्रुओं के रूप में भी उस परमात्मा की आभा है ।

विजयादशमी के दिन रावण को परास्त कर श्रीरामचन्द्रजी विजयी हुए । रावण की नाईं वासनाओं के वेग में हम खिंच न जायें इस याद में रावण को हर बारह महीने में दे दीयासलाई ! रावण के पुतले को तो दीयासलाई देते हैं लेकिन हमारे भीतर भी राम और रावण दोनों बैठे हैं । सद्विचार है, शांति की माँग है - यह राम का स्वभाव है और 'मेरा तो मेरे बाप का, इसका भी मेरा ही है' - ये रावण की वृत्तियाँ भी हैं ।

आप देख सकते हो कि भीतर राम और रावण का भाव कैसा छुपा है। रामायण या महाभारत हमारे भीतर कैसा छुपा है। कोई भोजन की थाली परोस दे जिसमें कुछ भोजन सात्त्विक व स्वास्थ्यप्रद है और कुछ ऐसी चीज है जो चरपरी है, स्वास्थ्य के लिए अच्छी नहीं है लेकिन मुँह में पानी लाये ऐसी है तो बस, राम-रावण युद्ध चालू हो जाता है। राममयी वृत्ति कहती है कि 'नहीं, यह सात्त्विक खायें, इतना ही खायें' लेकिन रावण-वृत्ति, आसुरी वृत्ति कहेगी, 'क्या है ! इतना थोड़ा-सा तो खा लो।' 'खायें - न खायें, खायें - न खायें...' के द्वन्द्व में अगर राममयी वृत्ति का समर्थन करते हो तो संयम से उतना ही खाकर उठोगे जितना खाना चाहिए। अगर रावण-वृत्ति का समर्थन करते हो तो उतना सारा खा लोगे जो नहीं खाना चाहिए। आसुरी, राजसी वृत्ति का आप समर्थन करते हो कि सात्त्विक वृत्ति का करते हो ? राम-रस का महत्त्व जानते हो कि कामवासना को महत्त्व देते हो ?

जो दसों इन्द्रियों से सांसारिक विषयों में रमण करते हुए उनसे मजा लेने के पीछे पड़ता है वह रावण की नाईं जीवन-संग्राम में हार जाता है और जो इन्हें सुनियंत्रित करके अपने अंतरात्मा में आराम पा लेता है तथा दूसरों को भी आत्मा के सुख की तरफ ले जाता है वह राम की नाईं जीवन-संग्राम में विजय पाता है और अमर पद को भी पा लेता है।

****

(पृष्ठ १० से 'ज्ञान की वृत्ति...' का शेष) तत्त्व में नहीं होती। तब आत्मा-परमात्मा में कहाँ से होगी ? अघोर शिव है, आत्मा है, परमात्मा है, ब्रह्म है। उस परमेश्वर में, उस अघोर आत्मा में अपनी रुचि, प्रीति, अपने ज्ञान को लगायें तो दुःखी होने का सवाल ही पैदा नहीं होता। जब दुःख आये, चिंता आये तो विचार करें कि 'पृथ्वी, जल, तेज, वायु आदि सब अघोर हैं, उनका अधिष्ठान आत्मा भी अघोर है फिर मैं इनके आने-जाने से विषम कैसे हो सकता हूँ ?' कितना आराम हो जाता है ! संसार दुःखालय है लेकिन दुःख छुएगा नहीं। ज्ञान की वृत्ति से अघोर बन जाओगे। मन-बुद्धि अघोर हैं तो अपना अहं अलग से काहे को टकराने को रखता है ? अघोर के साथ मिलकर उस अघोर के आधारस्वरूप ईश्वर में उपाय खोजो; न त्यागी बनो न रागी बनो, अपने अधिष्ठान-स्वरूप को जानने का प्रयत्न करो। जिन्होंने जाना है ऐसे आत्मवेत्ता के दर्शन-सत्संग पानेवाले धन्य हैं ! उनके माता-पिता भी धन्य हैं ! शिवजी कहते हैं :

धन्या माता पिता धन्यो गोत्रं धन्यं कुलोद्भवः ।
धन्या च वसुधा देवि यत्र स्याद् गुरुभक्तता ।।

****

(पृष्ठ १८ से ' ७० दिन तक...' का शेष) से किराया करवा के फिर मेरे को स्वामीजी ने घर वापस भेज दिया।

फिर भी मन में कभी ऐसा नहीं हुआ कि 'मैंने पत्नी व घर-बार छोड़ा, ४० दिन इंतजार किया और स्वामीजी ने खिलाया-पिलाया भी नहीं, वापस घर लौटा दिया संसार के कीचड़ में, ऐसे गुरु नहीं चाहिए।' ऐसा दुर्भाग्य का विचार यदि आता तो मैं पूर्ण गुरुकृपा पाने में सफल नहीं होता। मैं घर आया, १३ दिन रहा लेकिन रहना मुश्किल। फिर नर्मदा-किनारे पहुँच गया। वहाँ अनुष्ठान करते समय शिवजी ने प्रेरणा की कि

'गुरु के पास जाओ, वहाँ मैं तुमसे मिलूँगा।' फिर गुरुदेव को चिट्ठी लिखी कि 'आपकी आज्ञा का तो मैंने पालन किया है लेकिन अब स्वीकार करो, यह-वह...' ऐसे करके फिर मुलाकात हुई और बात बन गयी।

सबकी माँग का नाम है आत्मसाक्षात्कार

कितना भी धन मिल जाय, सत्ता मिल जाय, कितनी भी अप्सराएँ मिल जायें अथवा कुछ भी मिल जाय तो भी सच्चे सुख की प्यास दब सकती है, बुझ नहीं सकती । कितना भी बाहर का सुख आ जाय लेकिन आत्मसाक्षात्कार के सुख की प्यास सभीके अंदर छुपी है । आपको कितना भी धन मिल जाय, कितना भी अनुकूल पति या पत्नी मिल जाय, कितना भी यश मिल जाय फिर भी आप और सुखी होने की कोशिश करोगे । तो जो परम सुख है उसका नाम है आत्मसाक्षात्कार ! परम सुख, परम ज्ञान, परम सामर्थ्य का अनुभव, परब्रह्म-परमात्मा और अपने आत्मा के मिलन के दिवस का नाम है आत्मसाक्षात्कार दिवस । कैसा होता है बताया नहीं जाता (वर्णन में नहीं आता)।

रामकृष्ण परमहंस को तोतापुरी गुरु की कृपा से आत्मसाक्षात्कार हुआ तो ३ दिन तक उसमें खोये रहे, हमारे को हुआ तो ढाई दिन उसमें... ३ मिनट भी उसमें स्थिति हो जाय तो फिर गर्भवास नहीं होता, जन्म-मरण नहीं होता । आपने ३ सेकंड तक सूरज को देखा और हमने ३० सेकंड तक सूरज को देखा, उसके विषय में सोचा लेकिन जो सूरज ३ सेकंड में दिख गया वही ३० सेकंडवाला है । सूरज को देखना तो आँखों के लिए हानिकारक है लेकिन सूरज में भी जिसकी चमक है, चंदा में जिसकी चाँदनी है और पृथ्वी में जिसकी गंध है, जल में जिसका रस है उस परब्रह्म-परमात्मा से हाथ मिलाकर कृतकृत्य होने का नाम है आत्मसाक्षात्कार !

सतयुग में ऐसे आत्मसाक्षात्कारी पुरुषों का खूब-खूब प्राकट्य होता था । 'श्रीमद्भागवत' में आता है कि 'सतयुग के अधिकांश लोग तो समदर्शी और आत्मरामी होते थे एवं बाकी लोग स्वरूप-स्थिति के लिए अभ्यास में तत्पर रहते थे।'

इसलिए उस समय मंदिर, मस्जिद, गिरजाघरों की आवश्यकता नहीं थी । सतयुग में सात्त्विक बुद्धि थी, सात्त्विक व धर्म का आचरण था, लोग सत्य ही बोलते थे और ब्रह्मज्ञानी गुरुओं को पहचानते थे, ब्रह्मज्ञानी का उपदेश उनको पच जाता था ।

युग बदले, सत्त्वगुण में रजोगुण बढ़ा, फिर युग बदला तो तमस का अंश बढ़ा । कई लोग ऐसे ही ब्रह्मज्ञानी होने की घोषणा कर देते थे और कई लोग ब्रह्मज्ञानियों को अपनी मति-गति के अनुसार तौलते, फिर उनकी खोपड़ीरूपी तगड़ी (तराजू) डोलने लग जाती । तो सयाने ब्रह्मवेत्ताओं ने निर्णय किया कि अब रजो-तमोगुण से लोगों की मति-गति देह में आ गयी और बाहर के जगत में ब्रह्मज्ञानी को तत्त्वरूप से

पहचानने की मति अब न रही। उस मति के न होने का प्रमाण भगवान श्रीकृष्ण का यह वचन देता है :

मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये।

यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः ।।

'हजारों मनुष्यों में कोई एक मेरी प्राप्ति के लिए यत्न करता है और उन यत्न करनेवाले योगियों में भी कोई एक मेरे परायण होकर मुझको तत्त्व से अर्थात् यथार्थरूप से जानता है।' (गीता : ७.३)

धार्मिक तो सब हो जाते हैं लेकिन आत्मशुद्धि, हृदय की शुद्धि, सत्त्व की पूँजी के लिए कोई विरले ही चलते हैं, उनमें से कोई-कोई विरला पहुँचता है और उन पहुँचे हुओं में से मुझ चैतन्य आत्मा-परमात्मा का साक्षात्कार कोई विरला ही कर पाता है। रामजी के दर्शन तो हो जाते हैं लेकिन राम-तत्त्व का साक्षात्कार करने के लिए हनुमानजी अपने पास अष्टसिद्धि, नवनिधि होते हुए भी वर्षों तक रामजी की सेवा करते हैं और रामजी जब अयोध्या में अति प्रसन्न होते हैं एवं तत्त्वज्ञान का उपदेश देते हैं तब हनुमानजी को आत्मतृप्ति का अनुभव, आत्मसाक्षात्कार होता है।

वैदिक संस्कृति में जीते-जी परमात्मा के साक्षात्कार का जो प्रसाद मिलता है, वह और किसी मजहब में नहीं मिलता। उन मजहबों में से किसीने हिम्मत की और वैदिक संस्कृति का प्रसाद पाया तो सूफीवाद चला, मंसूर को आत्मसाक्षात्कार हुआ था लेकिन विरोधियों ने खूब विरोध किया। सुकरात को साक्षात्कार हुआ था तो विरोधियों ने उन्हें जहर का प्याला पिलाया लेकिन भारत में आत्मसाक्षात्कारी पुरुषों को पहचाननेवाला हृदय, पहचाननेवाली मति और गति अभी भी काफी अंश में है।

ब्रहम गिआनी का दरसु बडभागी पाईऐ ।
ब्रहम गिआनी कउ बलि बलि जाईऐ ।
ब्रहम गिआनी की मिति कउनु बखानै ।
ब्रहम गिआनी की गति ब्रहम गिआनी जानै ।

अर्जुन की बराबरी उस जमाने का कौन कर सकता है ? स्वर्ग जाना, दिव्यास्त्र लाना, रूप-लावण्य की अम्बार अप्सरा भोग-विलास के लिए आमंत्रित करे फिर भी अपने संयम का परिचय देना, उर्वशी जैसी अप्सरा के रूप-लावण्य को ठुकराकर लँगोटी के पक्के होने का सात्त्विक परिचय देनेवाले अर्जुन को शाप मिलता है कि "मेरे से भोग नहीं करेगा तो तू नपुंसक रहेगा सालभर !" फिर भी अर्जुन बोलता है, "कोई बात नहीं।" - ऐसा संयममूर्ति अर्जुन, जिसका रथ श्रीकृष्ण हाँकते हैं, उस अर्जुन को भी तत्त्व के साक्षात्कार के बिना विषाद का दुःख सहना पड़ता है। विराट रूप का दर्शन करने के बाद भी अर्जुन को भय का एहसास होता है। जब श्रीकृष्ण एकदम छलकते हैं और अर्जुन पूरा हृदय खुला रखता है, तब अर्जुन को आत्मसाक्षात्कार होता है और अर्जुन कहता है : नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा...

यह कितना ऊँचा दिवस है ! यह कितनी ऊँची अनुभूति है ! भगवान जिसका रथ हाँक रहे हैं उसके भी दुःखों का अंत तत्त्व-साक्षात्कार के बिना नहीं हुआ। भगवान का दर्शन करते हैं फिर भी उनका अज्ञान नहीं मिटा।

एक बार श्रीकृष्ण के चरणों में उद्धव ने ऐसा सवाल रख दिया : "प्रभु ! धरती पर बड़े-में-बड़ा काम क्या है ? जैसे मैं श्रीकृष्ण का दर्शन कर रहा हूँ, हनुमानजी ने रामजी का दर्शन किया... यह तो बड़ा काम है। लेकिन क्या इससे भी कोई बड़ा काम है ? ऊँची-में-ऊँची चीज क्या है ?"

भागवत के ११वें स्कंध में श्रीकृष्ण ने कहा है : 'शरीर को 'मैं' मानना, संसार को सच्चा मानना - यह

अज्ञानियों का स्वभाव है। आत्मा को 'मैं' जानना और परमात्मा को 'मैं-मेरे' में एकाकार देखना - यह ज्ञानी का स्वभाव है। स्वभावविजयः शौर्यम्।' शरीर में होते हुए भी अपने आत्मा-परमात्मा का साक्षात्कार करना यह बड़े-में-बड़ी बहादुरी है, सबसे बड़ा शौर्य है।

तो जो श्रीकृष्ण में चमचम चमकता है, भगवान शिव में समाधि-सुख देता है, जगदम्बा में, आदिशक्ति में उभरता है, वही भगवत्पाद लीलाशाहजी बापू में ज्ञान

देता है और आशाराम में छुपा हुआ जागृत होता है। इस घटना का नाम है आत्मसाक्षात्कार।

मैं मेरे गुरुदेव की ओर से भी बधाई देता हूँ कि गुरुदेव का मनोरथ सफल हुआ कि 'अपना अनुभव झेलनेवाला कोई पात्र मिल जाय...' गुरु की कृपा से, आप लोगों के शुभ पुण्यों से वह पुनीत दिवस आया था -

आसोज सुद दो दिवस, संवत् बीस इक्कीस।
मध्याह्न ढाई बजे, मिला ईस से ईस ॥
देह सभी मिथ्या हुई, जगत हुआ निस्सार।
हुआ आत्मा से तभी, अपना साक्षात्कार ॥

संस्कृतिप्रेमी सज्जनों के हृदयोद्गार
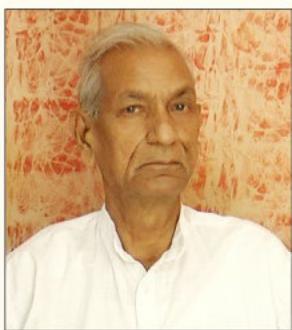
श्री भवानीलाल माथुर, प्रांत कार्यकारी अध्यक्ष, विश्व हिन्दू परिषद, जोधपुर : संत आशारामजी को गिरफ्तार करना ही एक घोर अपराध था। उनके केस में सरकारी कार्यवाही बहुत ढीली-ढाली गति से हो रही है। द्रुत गति से जाँच करवायें, जिससे जल्दी-से-जल्दी उनको इससे मुक्ति मिले। उन्हें जमानत मिलनी चाहिए।

श्री रमेश खटवानी, वरिष्ठ उपाध्यक्ष, केन्द्रीय सिंधी पंचायत एवं अध्यक्ष, सिंधी पंचायत जोधपुर : संत आशारामजी बापू के ऊपर जानबूझकर पॉक्सो एक्ट लगाया गया है। उनके सेवाकार्य पूरी दुनिया से छुपे हुए नहीं हैं। उनके द्वारा चलाये जा रहे कार्यक्रम निश्चित ही बच्चों में अच्छे संस्कार देने का, युवाओं, स्त्रियों, पुरुषों - सभीको आगे बढ़ाने का काम कर रहे हैं। सच्चाई की जीत होगी तथा दूध-का-दूध और पानी-का-पानी होगा।

विश्वप्रसिद्ध जादूगर श्री ओ.पी. शर्मा : इतने बड़े महान संत आशारामजी बापू, जो जनता की सेवा करते रहे, भारतीय संस्कृति को प्रचारित करते रहे और जिन्होंने भारतीय संस्कृति को जिंदा रखा, उन्हें षड्यंत्र में फँसा के बदनाम किया जा रहा है। उनको स्वतंत्र करना चाहिए और देश व भारतीय संस्कृति के हित में वे जो काम कर रहे हैं, उसमें और सहयोग करना चाहिए।
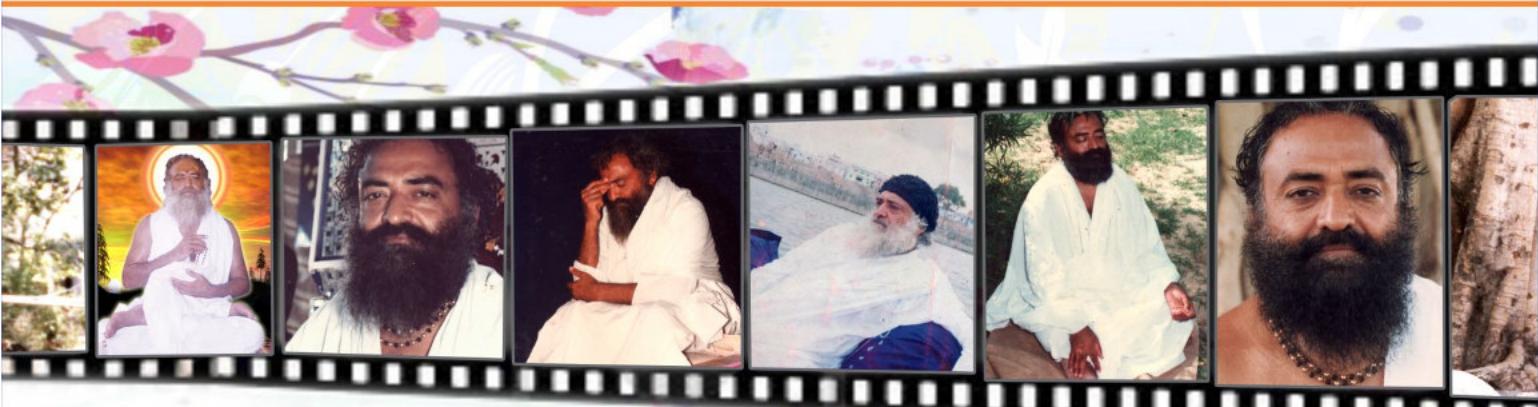
पूज्य बापूजी के प्रेरक जीवन-प्रसंग

श्री रामू रावत द्वारा बताये गये प्रसंग :

कितना रखते हैं खयाल !

ब्रह्मज्ञानी सद्गुरु का हृदय कितना करुणावान होता है इसका वर्णन शब्दों में करना सम्भव नहीं है। लाखों-करोड़ों माताओं के हृदयों की करुणा को मिला दो तब भी उससे सद्गुरु की करुणा की तुलना नहीं हो सकती ।

२०१० की घटना है। हरिद्वार आश्रम के पास गंगा की जो धाराएँ बहती हैं, उनमें से एक धारा पार करके जंगल में पूज्य बापूजी के लिए एक अस्थायी कुटिया बनायी थी। एक दिन शाम के ४-५ बजे बापूजी नाव से उस पार गये और कुटिया में जाकर ध्यानस्थ हो गये।

सूर्यास्त हो गया। मैं नाव के पास इंतजार कर रहा था। रात के १०-११ बजे बापूजी ध्यान से उठे, आये। मैंने बापूजी को आते हुए देखा तो नाव को पकड़ने के लिए मैं पानी में घुसने लगा तो बापूजी दूर से बोले : ''ऐ... रुक जा ! पानी में नहीं घुसना।''

फिर पास आकर बोले : ''मुझे तो याद ही नहीं था कि मैं जंगल में बैठा हूँ और यह भी ध्यान नहीं रहा कि नाव चलाने के लिए तू यहाँ बैठा है। रात हो गयी है, पैर गीले करना ठीक नहीं है। ऐसा कर तू भी बैठ जा।''

बापूजी ने नाव में मुझे भी बिठा दिया, सेवक को भी बिठा दिया व पूज्यश्री स्वयं पतवार चलाने लगे। थोड़ा आगे जा के नाव कीचड़ में फँस गयी।

बापूजी उसे निकालने का प्रयास कर रहे थे परंतु नाव निकल ही नहीं रही थी तो मैं पानी में कूद गया।

बापूजी बोले : ''तेरे को मना किया था न !''

मैंने कहा : ''जी, बापूजी का समय खराब हो रहा था !''

''हाँ, बात तो सही है। पर... अब कैसे करेगा ?''

बापूजी एकदम शांत हो गये। मेरे पैर भीग रहे थे तो पूज्यश्री का हृदय पसीज गया। मैंने आज तक अपने जीवन में बापूजी को इतना करुणाभाव में नहीं देखा था।

बापूजी बोले : ''तू एक काम करना, पानी में भीगा है तो आश्रम में जाकर पहले मालिश करना फिर सोना । रात को पैर गीले करने से बुढ़ापे में परेशानी होती है ।''

मैं नाव खींचकर उस पार ले गया । बापूजी उतरे और आश्रम पहुँचने तक २-३ बार मेरे को बोले : ''मालिश करके ही सोना ।'' कैसा करुणामय हृदय है पूज्य बापूजी का !

साधु-संतों के प्रति अद्‌भुत प्रेम

हरिद्वार आश्रम गंगा नदी के पास है । २०१० का ही प्रसंग है । बापूजी नदी के उस पार घूमने गये । एक साधु मिले । वे बापूजी को बोले : ''महाराजजी ! मैं आपका ७ दिन से इंतजार कर रहा हूँ ।''

बापूजी बोले : ''साधना कौन-सी करते हो और खाते क्या हो ?''

''मैं चने लेकर आया हूँ । रात को चने भिगोता हूँ, सुबह खाता हूँ और पेड़ पर जो कुटिया है उसमें बैठ के तपस्या, जप करता हूँ ।''

साधु की तपस्या देखकर बापूजी प्रसन्न हुए । जब पूज्यश्री नाव में बैठे तो मुझे बोले : ''अरे, वह साधु ७ दिन से चने खा रहा है । सुबह उसको प्रसाद दे आना ।''

अब मैंने सोचा, 'बापूजी के जिसको दर्शन हुए वह आदमी चने क्यों खाये !' मैंने रात को ही किशमिश, मूँगफली, पेठा आदि प्रसाद लिया और बापूजी से पूछा : ''बापूजी ! यह प्रसाद साधु को देने जाऊँ ?''

बापूजी बोले : ''अच्छा, प्रसाद कितना है, मेरे को दिखा ।''

प्रसाद देखकर बोले : ''उसको बोलना कि एक साथ नहीं खाये, थोड़ा-थोड़ा और चबा-चबाकर खाये ।''

मैं गया तो वे साधु दो पत्थरों को मंजीरों की तरह बजाकर कीर्तन कर रहे थे । मैंने कहा : ''बापूजी ने प्रसाद भिजवाया है ।''

''बापूजी ने मेरे लिए भिजवाया है !'' कहते हुए वे साधु प्रेमातिरेक से गद्‌गद हो गये ।

त्रिकालज्ञानी होते हैं ब्रह्मज्ञानी

२-३ दिन बाद पूज्य बापूजी शाम को घूम के जैसे ही नाव से उतरे, बोले : ''वह जो साधु उस पार रहता है, उसको बोलो, आज रात को वह उधर न रहे, इस पार आ जाय ।''

नाव लेकर उन साधु के पास हम गये : ''महाराजजी ! आज आप यहाँ नहीं बैठिये । आज रात को इधर रहने के लिए बापूजी ने मना किया है ।''

साधु की बापूजी के प्रति बड़ी श्रद्धा थी । वे तैयार हो गये, हम उन्हें नाव में बिठाकर इस पार ले आये । फिर वे रात को आश्रम में ही रुके । सुबह हम लोग गंगा नदी के उस पार गये तो देखा कि वहाँ रात को हाथी आया था, उसके पैरों के निशान दिखे और उसने महाराज का सारा सामान तहस-नहस कर दिया था । मटके तोड़ दिये, कनस्तर को तवे की तरह चपटा कर दिया था । मेरा तो हृदय भर आया कि ब्रह्मज्ञानी

(शेष पृष्ठ १९ पर)
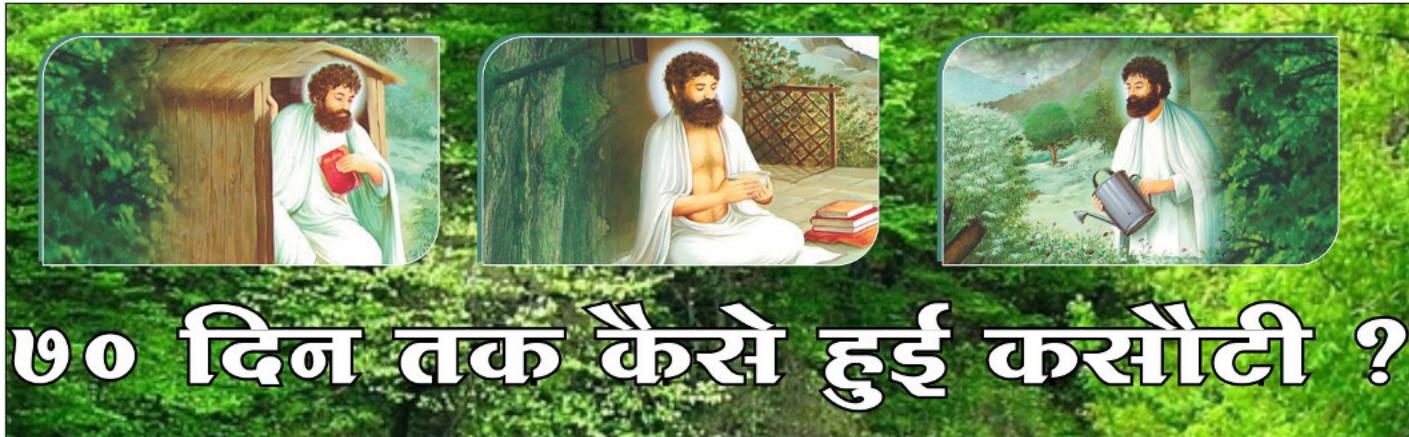
७० दिन तक कैसे हुई कसौटी ?

सद्गुरु शिष्य को अधिक उन्नत व तेजस्वी बनाने एवं सहनशक्ति बढ़ाने के लिए उससे कठोर व्यवहार करते हैं। उनकी मधुर चेष्टाएँ तो मधुर हैं लेकिन कठोर व्यवहार भी मधुर है। माँ के हाथ से मिला हुआ रसगुल्ला भी मीठा है और स्वास्थ्य के लिए उसके हाथ से मिली हुई कटु-से-कटु चीज-वस्तु, औषध भी हितकारी है।

तब की बात है जब मैं नैनीताल में स्वामी श्री लीलाशाहजी आश्रम में पहुँचा था। लकड़ी के पटियों से एक छोटा-सा कुटीर बना था। ऊपर सड़े-गले पतरे की छत और वह भी इतनी नीची कि सर्वांगासन नहीं कर सकते थे, वहाँ ४० दिन रहे। मूँग उबाल के खाते थे। जब स्वामीजी आये तो बोले : ''बस, दर्शन हो गया, जाओ !''

मैं चुप रहा। आँखों से आँसू बरसते देखे तो बोले : ''अच्छा, थोड़े दिन रह लो फिर चले जाना।''

फिर पूछा : ''क्या खाता है ?''

''मूँग की दाल खा लेता हूँ। आज आप आनेवाले थे तो ज्यादा बनायी है, स्वीकार हो जाय।''

''अच्छा, ले आना।''

श्रीचरणों में दाल ले गया। रसोइये ने दाल निकाल ली। बची दाल मैंने लेकर रख दी। सोचा था कि 'दाल अर्पण करूँगा तो १-२ फुलके (रोटी) मिल जायेंगे।' लेकिन फुलका नहीं मिला। रात को भी फुलका नहीं मिला। सर्दी के दिन नहीं थे परंतु नैनीताल माना सर्दी-सर्दी... शरीर कुल्फी हो जाता था और फिर रात को खाया नहीं तो सारी रात नींद नहीं आयी।

ऐसा करते-करते ३० दिन और रहा।

स्वामीजी ने एक दिन पूछा : ''पैसे कहाँ से लाता है ?''

''कुछ पैसे घर से लेकर आया था।''

''अब कितने पैसे पड़े हैं ?''

''२ रुपये और एक-दो आने बचे हैं।'' मेरी आँखों से आँसू आ गये, बोला : ''कभी-कभी तो ऐसा होता है कि स्वामीजी आज्ञा करेंगे, 'चला जा' तो गाड़ी में खड़िया पलटन की नाईं बैठ जाऊँगा। आज तक माँगा नहीं और माँगना है भी नहीं लेकिन २ रुपये में बसवाला भी नहीं ले जायेगा। इसलिए मेरे को जाने की आज्ञा नहीं करना।''

स्वामीजी : ''नहीं-नहीं, तुम चिंता नहीं करो। २५ रुपया और आटा तुम्हारे नाम का कोई दे गया है। अब फुलका बनाकर खाया करो और पैसे रखो।'' था सब उन्हींका।

घर में मैंने एक मित्र को ६०० रुपये दे रखे थे। हमने उसे चिट्ठी लिखी तो उसने १०० रुपये भेजे। उन्हींमें

(शेष पृष्ठ १२ पर)

आरोग्य व पुष्टि देनेवाली खीर

शरद पूनम की रात को आप जितना दूध उतना पानी मिलाकर आग पर रखो और खीर बनाने के लिए उसमें यथायोग्य चावल तथा शक्कर या मिश्री डालो । पानी वाष्पीभूत हो जाय, केवल दूध और चावल बचे, बस खीर बन गयी । जो दूध को जलाकर तथा रात को बादाम, पिस्ता आदि डाल के खीर खाते हैं उनको तो बीमारियों का सामना करना पड़ता है । उस खीर को महीन सूती कपड़े, चलनी या जाली से अच्छी तरह ढककर चन्द्रमा की किरणों में पुष्ट होने के लिए रात्रि ९ से १२ बजे तक रख दिया । बाद में जब खीर खायें तो पहले उसे देखते हुए २१ बार 'ॐ नमो नारायणाय ।' जप कर लें तो वह औषधि बन जायेगी । इससे वर्षभर आपकी रोगप्रतिकारक शक्ति की सुरक्षा व प्रसन्नता बनी रहेगी ।

इस रात को हजार काम छोड़कर कम-से-कम १५ मिनट चन्द्रमा की किरणों का फायदा लेना, ज्यादा लो तो हरकत नहीं । छत या मैदान में विद्युत का कुचालक आसन बिछाकर चन्द्रमा को एकटक देखना । अगर मौज पड़े तो आप लेट भी सकते हैं । श्वासोच्छ्वास के साथ भगवन्नाम और शांति को भरते जायें, निःसंकल्प नारायण में विश्रांति पायें ।

****

(पृष्ठ १६ से 'पूज्य बापूजी...' का शेष) महापुरुष की हर एक लीला एवं उनके वचनों में जीवमात्र की कितनी भलाई व गूढ़ रहस्य छिपा होता है ! जो उनके वचनों को मानकर चल पड़ता है उसका कल्याण हो जाता है ।

****

पेड़ भी आज्ञा मानते हैं

अहमदाबाद में पूज्यश्री के निवासस्थान के निकट एक आँवले का पेड़ था । उसमें फल नहीं आते थे । एक बार बापूजी घूमते हुए उधर आये । बापूजी ने पूछा : ''इसमें फल लगते हैं कि नहीं ?''

''जी नहीं ।''

बापूजी बोले : ''एक तो साधकों से सेवा लेता है, आश्रम का पानी पीता है, खाद खाता है, इस पुण्यभूमि में रह रहा है और फल नहीं दे रहा है तो इसका इस योनि से उद्धार कैसे होगा ? इसको ३ बार बोलना कि फल दे ।''

उस साधक ने पेड़ से ३ बार वैसा ही बोल दिया । उसके बाद से उस पेड़ में फल आने लगे । एक फल न

आराधना, उपवास और विश्रांति का सुवर्णकाल - पूज्य बापूजी

(नवरात्रि : १ से १० अक्टूबर)

'श्रीमद् देवी भागवत' के तीसरे स्कंध में महर्षि वेदव्यासजी जनमेजय को नवरात्रों का माहात्म्य बताते हुए कहते हैं :

६-६ मास में नवरात्रि आती है। शारदीय नवरात्र रावण-वध की तिथि के पहले आते हैं और दूसरे नवरात्र आते हैं वसंत ऋतु में रामजी के प्राकट्य के पहले। ये दोनों ऋतुएँ बड़ी क्रूर हैं। ये रोग उत्पन्न करनेवाली हैं। इन दिनों में व्यक्ति अगर नवरात्रि का व्रत और उपवास नहीं करता तो वह आगे चल के बड़ी-बड़ी बीमारियों का शिकार हो सकता है अथवा अभी भी बीमारियों में वह भुन जायेगा। अगर नवरात्रि व्रत रखता है, भगवती की आराधना करता है तो आराधना की पुण्याई व प्रसन्नता से मनोरथ भी पूरे होते हैं और शरीर में जो विजातीय द्रव्य हैं, उपवास और विश्रांति उन रोगकारक द्रव्यों को भस्म कर देती है।

नवरात्रि के उपवास से शरीर के जीर्ण-शीर्ण रोग और रोग लानेवाले कण ये सब नष्ट हो जाते हैं, पाप दूर होते हैं, मन प्रसन्न होता है, बुद्धि का औदार्य व तितिक्षा का गुण बढ़ता है और नारकीय योनियों से छुटकारा मिलता है। ९ दिन के नवरात्रि व्रत या उपवास नहीं रख सकते तो भैया ! ६ दिन, ५ दिन, नहीं तो अंतिम ३ दिन कड़क नियम पालन करते हुए उपवास रखें तो भी ९ दिन के नवरात्रि का फल प्राप्त कर सकते हैं, ऐसा लिखा है।

खेल-खेल में बढ़ायें ज्ञान

नीचे दी गयी वर्ग-पहेली में प्रश्नों के आधार पर उत्तर खोजिये।

(१) आश्विन शुक्ल दशमी को वह कौन-सा मुहूर्त (४८ मिनट का समय) आता है, जो सम्पूर्ण कार्यों में विशेष सिद्धिप्रद होता है ?

(२) किस तिथि को सूर्योदय से पूर्व जागरण कर तेल-मालिश करके स्नान करने से यमलोक नहीं देखना पड़ता ?

(३) श्रीमद्भगवद्गीता का प्राकट्य मार्गशीर्ष मास के शुक्ल पक्ष की किस तिथि को हुआ था ?

(४) एक ही दिन में एकादशी, द्वादशी और त्रयोदशी तिथियों का योग हो तो वह कौन-सी एकादशी कहलाती है, जो एक हजार एकादशी व्रतों का फल देनेवाली होती है ?

(५) वर्ष में किस तिथि के चन्द्रमा की किरणों के द्वारा अमृत बरसता है ? उस रात्रि में भजन, सत्संग, कीर्तन एवं चन्द्रदर्शन शारीरिक व मानसिक आरोग्य के लिए विशेष लाभदायक हैं।

स	श	वि	म	वि	ज	य	मु	हू	र्त	ज	सा
द	द्	त्सं	त्रि	ई	रा	वि	प	स	ल	तु	मो
र	श	स्पृ	म	द्य	न	प	सा	सं	त्य	ए	क्ष
मी	शा	ह	रु	त्रि	र	क	म	र	आ	श	दा
त्रि	रा	श	रा	घ	क	त्रि	नि	की	ठ	व	ए
पा	जी	बा	जी	म	च	का	दा	दी	ड़	ओ	का
ल	शा	बा	र	व	तु	ल	पू	गु	थ	ङ	द
ना	ध	व	श्र	ना	र्द	सं	डा	ढ	रा	ध	शी
या	नं	ल	य	पु	शी	ख	ढ़	र	द	पा	ड
ज	सं	ड़	क	गा	ट	न	फा	आ	ल	उ	फू
स	वृ	ला	सी	ओ	झ	वा	न	शि	व	जी	ट
उ	ए	ख	श	र	द	पू	र्णि	मा	ठ	ट	ष

श्रीमद्भगवद्गीता

एक परिचय

- पूज्य बापूजी
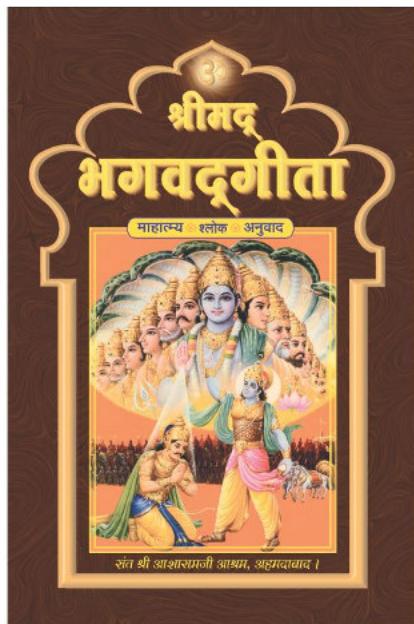
(गतांक से आगे)

गीता का चौथा अध्याय है :

ज्ञानकर्मसंन्यासयोग

भगवान कहते हैं कि 'स्वधर्म का पालन करते रहना ठीक है पर उसके साथ चित्तशुद्धि भी जरूरी है । कर्म करें लेकिन वह कर्म पूरे मनोयोग से करें तो वह कर्म उन्नतिकारक बन जायेगा ।

कर्म की गति गहन है इसलिए कर्म के तत्त्व को भलीभाँति समझकर कर्मबंधन से मुक्त हो जाना ही बुद्धिमानी है । आसक्तिरहित होकर कर्म करनेवाले के यज्ञरूप कर्म विलीन हो जाते हैं ।'

सर्व प्रकार के यज्ञों में ज्ञानयज्ञ की श्रेष्ठता बताते हुए भगवान कहते हैं :

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया ।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः ।।

'उस ज्ञान को तू तत्त्वदर्शी ज्ञानियों के पास जाकर समझ, उनको भलीभाँति दंडवत् प्रणाम करने से, उनकी सेवा करने से और कपट छोड़कर सरलतापूर्वक प्रश्न करने से वे परमात्म-तत्त्व को भलीभाँति जाननेवाले ज्ञानी महात्मा तुझे उस तत्त्वज्ञान का उपदेश करेंगे ।' (गीता : ४.३४)

यह उस ज्ञान की बात है जिसके समान इस संसार में पवित्र करनेवाला कुछ भी नहीं है । इस ज्ञान का आश्रय लेकर विवेकरूपी तलवार से अपने हृदय में स्थित अज्ञानजनित संशय का छेदन करके समत्वरूप कर्मयोग करता हुआ युद्ध के लिए खड़ा हो जा ।

यह संसार भी युद्ध का मैदान है । इसमें जो ज्ञान का आश्रय लेकर बाहर-भीतर के शत्रुओं से युद्ध करेगा, वह सफल हो जायेगा । अतः ज्ञानसंयुक्त कर्म करो । अपने कर्ता और भोक्ता भाव को हटाओ ।

आँखें देखती हैं तो अहंकार बोलता है, 'मैंने देखा ।' जीभ चखती है, अहंकार बोलता है, 'मैंने चखा ।' नाक सूँघती है, अहंकार बोलता है कि 'मैंने सूँघा ।' मन सोचता है, अहंकार बोलता है, 'मैं सोच रहा हूँ ।' बुद्धि निर्णय करती है, अहंकार बोलता है, 'मेरा निर्णय है ।'

हम अफ्रीका से लौटे तो लोगों ने बोला, 'बापूजी काले हो गये ।' हम यूरोप से लौटे तो लोगों ने बोला, 'बापूजी गोरे हो गये ।' हम हिमालय से लौटे तो लोगों ने कहा कि 'बापूजी पतले और बड़े तेजस्वी हो गये ।' हकीकत में यह हमारा चमड़ा कहीं गोरा कहीं काला हुआ, कहीं मांस घटा कहीं बढ़ा, हम तो वही-के-वही थे लेकिन हम क्या हैं, यह नहीं जानते तो हमारे शरीर को ही आप बापू मानते हो और हम भी भ्रमित होकर अपने को काला और गोरा मानें तो यह ज्ञान का अनादर है । यह प्रार्थना हम इसलिए कर रहे हैं

कि आपको भी कोई काला-गोरा कहे तो आप अपने को काला-गोरा मत मानिये, काला-गोरा चमड़ा होता है । पतला और मोटा मांस, नाटा और लम्बा हड्डियों का ढाँचा होता है । सुखी और दुःखी मन होता है, राग-द्वेष बुद्धि में आता है और आप इन सब परिस्थितियों को देखनेवाले असंग आत्मा हैं, इस प्रकार की ज्ञानकर्मसंन्यासयोग की बात समझकर मुक्ति का माधुर्य पा सकते हो ।

पाँचवाँ अध्याय है :

कर्मसंन्यासयोग

इसमें सांख्ययोग और कर्मयोग का निर्णय है । सांख्ययोगी और कर्मयोगी का व्यवहार बाह्य रूप से भले अलग दिखाई पड़ता हो किंतु अंत में तो दोनों सच्चिदानंद परमात्मा के ज्ञान, आनंद और शांति रूपी एक ही लक्ष्य को प्राप्त होते हैं ।

एकं सांख्यं च योगं च यः पश्यति स पश्यति ।

'जो पुरुष ज्ञानयोग और कर्मयोग को फलरूप में एक देखता है, वही यथार्थ देखता है ।'

(गीता : ५.५)

मनुष्य के शुभाशुभ कर्मों के फल को सर्वव्यापी परमेश्वर ग्रहण नहीं करता परंतु अज्ञान के द्वारा ज्ञान ढका हुआ है, उसीसे सब मनुष्य मोहित हो रहे हैं । जिस मनुष्य ने परमात्मा के तत्त्वज्ञान द्वारा अपना अज्ञान नष्ट किया है, वह मुक्त है ।

छठा अध्याय है :

आत्मसंयमयोग

इस अध्याय में ज्ञानयोग तथा ध्यानयोग की बात आती है । भगवान शिवजी पार्वतीजी को कहते हैं :

नास्ति ध्यानसमं तीर्थम् ।

'ध्यान के समान कोई तीर्थ नहीं ।'

तीर्थ में तुम्हारा शरीर नहाता है लेकिन ध्यान में तुम स्वयं परमात्मा में नहाते हो ।

नास्ति ध्यानसमं यज्ञम् ।

'ध्यान के समान कोई यज्ञ नहीं ।'

यज्ञ में तुम्हारी वस्तु, स्वधा (पितृ-अन्न) स्वाहा होती है लेकिन ध्यान में तो तुम्हारे पाप-ताप और अहंकार के संस्कार स्वाहा होते हैं ।

नास्ति ध्यानसमं दानम् ।

'ध्यान के समान कोई दान नहीं ।'

दान से तो धन की शुद्धि होती है लेकिन ध्यान से तो तुम्हारे 'स्व' की शुद्धि होती है ।

नास्ति ध्यानसमं तपम् ।

'ध्यान के समान कोई तप नहीं ।'

तस्मात् ध्यानं समाचरेत् ।

अतः हररोज ध्यान करना चाहिए ।

जिसको ध्यान-ज्ञान में आगे बढ़ना है उसको पहले सत्कर्म करना चाहिए । शुभ कर्म करे सत्यस्वरूप को पाने के लिए तो सत्कर्म हो गया । ऐसे कर्मयोगी का मन धीरे-धीरे ध्यान में प्रविष्ट हो जाता है ।

अनाश्रितः कर्मफलं कार्यं कर्म करोति यः ।

जो आसक्तिरहित होकर करनेयोग्य कर्म करता है और फल की लिप्सा नहीं रखता है, उसका हृदय संन्यासी के हृदय जैसा हो जाता है, वह योगी हो जाता है।

स संन्यासी च योगी च न निरग्निर्न चाक्रियः ।।

(गीता : ६.१)

'अग्नि (यज्ञ-हवनादि) को छोड़ दिया, क्रिया को छोड़ दिया... मैं संन्यासी हो गया', नहीं, संन्यासी तो हो लेकिन पूर्ण संन्यासी-हृदय तो तब बनता है जब आप सत्कर्म करें और सत्कर्म में फल की, संसार की इच्छा न रखें। भगवान को ही पाने की दृढ़ भावना हो तो आप संन्यास और योग के रास्ते दौड़ रहे हैं, आगे बढ़ रहे हैं।

निष्काम कर्म तो करने चाहिए लेकिन कर्मों से समय बचाकर फिर अंतरात्मा में डूबने का, अंतर्मुख होने का अभ्यास भी करना चाहिए।

इस तरह आत्मसंयमयोग में आत्मोद्धार की प्रेरणा दी है। इसमें भगवत्प्राप्त महापुरुषों के लक्षण दिये गये हैं। ध्यानयोग की समझ और महत्त्व बताकर योगी की श्रेष्ठता का वर्णन करते हुए भगवान ने कहा है कि तपस्वी, शास्त्रज्ञानी और विद्वानों से भी योगी श्रेष्ठ है।

तपस्विभ्योऽधिको योगी ज्ञानिभ्योऽपि मतोऽधिकः ।

(गीता : ६.४६)

अर्जुन ! तपस्वी से योगी अधिक श्रेष्ठ है। तपस्वी तप तो करता है

लेकिन तप का कुछ फल बाहर भोगना चाहता है परंतु योगी तो अंतरात्मा का सुख भोगता है। कोई शास्त्रज्ञानी, विद्वान है तो वह बाहर के शास्त्र रट-रट के विद्वान बना है लेकिन योगी में विद्या तो अंतरात्मा से उभरती है। कर्मिभ्यश्चाधिको योगी... 'सकाम कर्म करनेवालों से भी योगी श्रेष्ठ है।' तस्माद्योगी भवार्जुन। 'इससे हे अर्जुन ! तू योगी हो।'

दृष्टिं ज्ञानमयीं कृत्वा पश्येद् ब्रह्ममयं जगत् ।

अंतरात्मा में शांत हो जाय और दृष्टि ज्ञानमयी बनाकर जगत को ब्रह्ममय देखे, यह योग है।

नजरें बदलीं तो नजारे बदले।
किश्ती ने बदला रुख तो किनारे बदले ।।

सत्संग दृष्टि बदल देता है। भगवान कहते हैं :

योगिनामपि सर्वेषां मद्गतेनान्तरात्मना ।

(गीता : ६.४७)

जो अंतरात्म-भाव से मुझे भजता है वह सब योगियों में मुझे विशेष मान्य है। (क्रमशः)

नियम भले छोटा-सा ही क्यों न हो, अगर उसका दृढ़तापूर्वक पालन किया जाय तो संकल्पशक्ति बढ़ती है, आत्मविश्वास जागता है, मन वश होता है तथा दोषों व कुसंस्कारों से छुटकारा पाने का बल मिलता है। 'ऋग्वेद' (९.६१.२४) में आता है : व्रतेषु जागृहि। 'आप अपने व्रत-नियमों के प्रति सदा जागृत रहें।' महापुरुषों के जीवन को निहारा जाय तो उसमें किसी-न-किसी व्रत-नियम का प्रकाश अवश्य मिलेगा। श्री रमण महर्षि का मौन-व्रत, पितामह भीष्म, आद्य शंकराचार्यजी आदि का ब्रह्मचर्य-व्रत तथा कणाद, पिप्पलाद आदि ऋषियों के आहारसंबंधी व्रत इतिहासप्रसिद्ध हैं। ब्रह्मनिष्ठ पूज्य बापूजी की भी नियमनिष्ठा सभीके लिए प्रकाशस्तम्भ है।
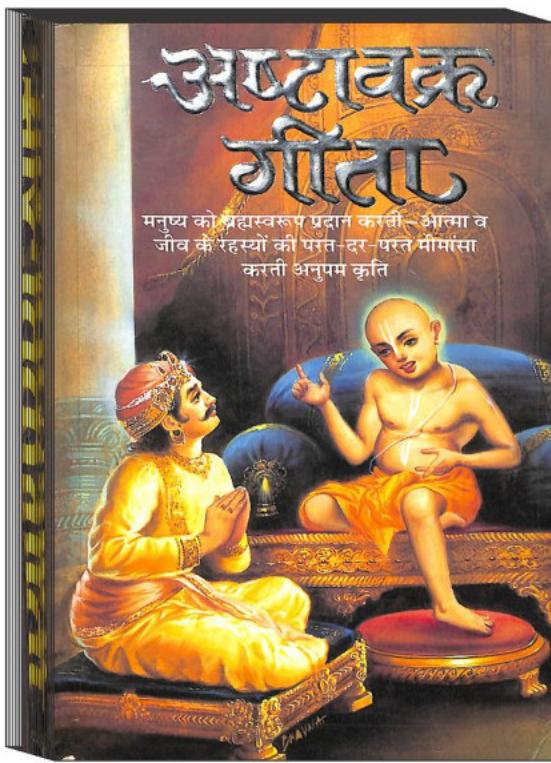
अष्टावक्र गीता

(गतांक से आगे)

बंदी के साथ शास्त्रार्थ

एक बार अष्टावक्रजी के पिता कहोड मुनि अपनी पत्नी की बात मानकर धन के लिए राजा जनक के दरबार में शास्त्रार्थ करने गये। बंदी नाम के एक पंडित ने शास्त्रार्थ में अद्‌भुत तरीके से विविध प्रश्न करके कहोड मुनि को हरा दिया। शास्त्रार्थ में यह शर्त थी कि जो ब्राह्मण हार जाय उसे जल में डुबा दिया जाय। शर्त के अनुसार कई ब्राह्मण जल में डुबा दिये गये थे, कहोड मुनि को भी जल में डुबा दिया गया। कुछ समय बाद गर्भस्थ अष्टावक्रजी का जन्म हुआ।

उद्दालक ऋषि को कहोड मुनि के साथ घटित घटना का समाचार मिला। उनको बहुत दुःख हुआ। उन्होंने पुत्री सुजाता से कहा : ''अगर अष्टावक्र को इस बात का पता चलेगा कि उसके पिता को किसीने मार डाला है तो उसे बहुत दुःख होगा। अतः कुछ भी हो, अष्टावक्र को यह भेद मत बताना। उससे यही कहना कि उद्दालक ऋषि ही तेरे पिता हैं।''

इस तरह अष्टावक्रजी अपने नाना उद्दालक ऋषि को ही अपने पिता और उनके पुत्र श्वेतकेतु, जो वास्तव में उनके मामा थे, उनको अपना भाई मानने लगे। समय बीतता गया, अष्टावक्रजी करीब १२ साल के हुए।

जैसे उत्तानपाद राजा की गोद में जब उत्तम बैठा था और ध्रुव बैठने गया तो उत्तम की माँ ने ताना मारा था, वैसे ही एक बार जब अष्टावक्रजी उद्दालक ऋषि की गोद में बैठे थे तब श्वेतकेतु ने आकर कहा : ''जा, तू अपने पिता की गोद में बैठ। ये तेरे पिताजी नहीं, मेरे पिताजी हैं।''

यह सुनकर अष्टावक्रजी को बड़ा दुःख हुआ। उन्होंने इस बात का रहस्य जानने के लिए अपनी माँ से पूछा : ''मेरे पिता कौन हैं ? मुझे सच बताओ।''

माँ : ''पुत्र ! तेरे पिता राजा जनक के दरबार में शास्त्रार्थ करने गये थे। वहाँ शास्त्रार्थ में वे बंदी नाम के एक विद्वान पंडित से हार गये तो उन्हें जल में डुबा दिया गया।''

अष्टावक्रजी : ''माँ ! राजा जनक के दरबार में मेरे पिताजी की हत्या हुई है ! मैं राजा जनक के दरबार में जाऊँगा और उस अहंकारी पंडित को हराकर आऊँगा।''

माँ ने अष्टावक्रजी को खूब समझाया किंतु वे न माने। उन्हीं दिनों राजा जनक के दरबार में एक अद्‌भुत यज्ञ का आयोजन किया गया था, जिसमें भाग लेने के लिए अष्टावक्रजी श्वेतकेतु के साथ निकल पड़े। यज्ञशाला के मार्ग में ही राजा जनक से उनकी भेंट हो गयी। अष्टावक्रजी को देखकर राजा के सेवकों ने कहा : ''दूर हटो, रास्ता दो।''

अष्टावक्रजी : ''राजन् ! पहले आप मेरी बात सुनें। कोई बहरा या अंधा, कोई स्त्री या कोई राजा अथवा सिर पर बोझा उठाये हुए कोई व्यक्ति जाता हो तो प्रथम उसे रास्ता देना चाहिए। परंतु यदि राजा और

ब्राह्मण रास्ते में आमने-सामने पड़ जायें तो राजा को बगल में हो जाना चाहिए और ब्राह्मण को रास्ता दे देना चाहिए, इसको धर्म कहते हैं।''

राजा जनक ने मार्ग दिया और अष्टावक्रजी यज्ञशाला के द्वार पर पहुँचे। वहाँ उन्होंने द्वारपाल से कहा : ''मुझे यज्ञशाला में जाने दीजिये। मुझे बंदी से शास्त्रार्थ करना है।''

द्वारपाल : ''बालक ! यहाँ अच्छे-अच्छे विद्वान ब्राह्मणों को भी परीक्षा लेकर ही प्रवेश दिया जाता है और तू तो अभी बालक है। तुझे प्रवेश नहीं मिलेगा।''

अष्टावक्रजी :

न तेन स्थविरो भवति येनास्य पलितं शिरः।
बालोऽपि यः प्रजानाति तं देवाः स्थविरं विदुः॥
न हायनैर्न पलितैर्न वित्तेन न बन्धुभिः।
ऋषयश्चक्रिरे धर्मे योऽनूचानः स नो महान्॥

(महाभारत, वन पर्व : १३३.११, १२)

''तुम किसको बालक कह रहे हो ? इस शरीर को ? जिसके बाल सफेद हो गये हों केवल उसे वृद्ध नहीं कहा जाता। अगर बालक के पास भी ज्ञान है तो पंडित, विद्वान उसे ज्ञानवृद्ध कहते हैं। जिसकी बड़ी उम्र हो, बाल सफेद हो गये हों, धन ज्यादा हो या बड़ा पुत्र-परिवार हो उसे श्रेष्ठ नहीं कहा जाता। ऋषियों ने नियम बनाया है कि जो सम्पूर्ण वेदों के रहस्य के ज्ञाता (ब्रह्मज्ञानी) होते हैं वे ही सबसे श्रेष्ठ होते हैं।''

''ऋषिवर ! क्षमा कीजिये।''

आखिर राजा जनक की यज्ञशाला में पहुँचकर अष्टावक्रजी बोले : ''राजन् ! वर्तमान समय में केवल आप ही उत्तम यज्ञकर्मों का अनुष्ठान करनेवाले हैं। सम्राट ! हमने सुना है कि आपके यहाँ बंदी नाम से प्रसिद्ध विद्वान हैं, जो वाद-विवाद के मर्म को जाननेवाले कितने ही विद्वान ब्राह्मणों को शास्त्रार्थ में हरा चुके हैं। मैं यहाँ अद्वैत ब्रह्म के विषय में उनसे शास्त्रार्थ करने आया हूँ। वे बंदी कहाँ हैं ? मैं उनसे मिलकर उनके तेज को उसी प्रकार शांत कर दूँगा जैसे सूर्य तारों की ज्योति को विलुप्त कर देते हैं।''

''बेटा ! बंदी को जीतने की अभिलाषा से शास्त्रार्थ करने के लिए कितने ही विद्वान आये लेकिन बंदी के करीब जाते ही उनका प्रभाव नष्ट हो गया। वे पराजित एवं तिरस्कृत होकर चुपचाप राजसभा से चले गये।''

''तो क्या मैं शास्त्रार्थ किये बिना ही लौट जाऊँ ? क्या आप मुझे दुर्बल समझ रहे हैं ? बंदी को मेरे जैसा शास्त्रार्थ करनेवाला कोई नहीं मिला इसलिए वह शेर की तरह दहाड़ रहा है लेकिन आज वह पराजित होकर ही रहेगा।'' (क्रमशः)

अमृतबिंदु - पूज्य बापूजी

* सृष्टि बनाने और प्रलय करने का सामर्थ्य आ जाय फिर भी सद्गुरु की कृपा के बिना देह की परिच्छिन्नता नहीं मिटती।

गुर बिनु भव निधि तरइ न कोई।
जौं बिरंचि संकर सम होई॥ (रामायण)

* व्यर्थ की बातों में समय न गँवायें। व्यर्थ की बातें करेंगे-सुनेंगे तो जगत की सत्यता दृढ़ होगी, जिससे राग-द्वेष की वृद्धि होगी और चित्त मलिन होगा। अतः राग-द्वेष से प्रेरित होकर कर्म न करें।

* कर्म तो करें लेकिन कर्तापने का गर्व न आये और लापरवाही से कर्म बिगड़े नहीं, इसकी सावधानी रखें। यही कर्म में कुशलता है। सबके भीतर बहुत सारी ईश्वरीय सम्पदा छिपी है। उस सम्पदा को पाने के लिए सावधान रहना चाहिए, सतर्क रहना चाहिए।

आयु, पुत्र, यश, स्वर्ग, पुष्टि, धन-धान्य देनेवाला श्राद्ध-कर्म
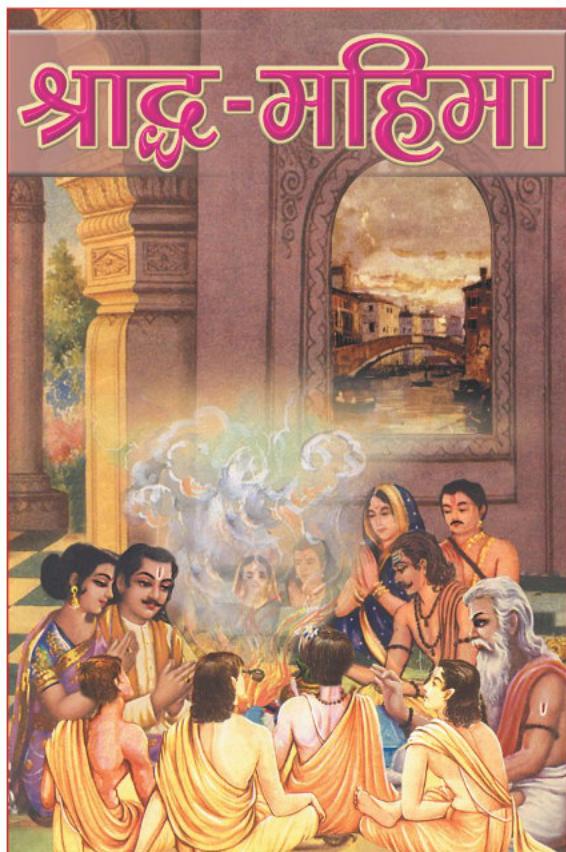
(श्राद्ध पक्ष : १६ से ३० सितम्बर)

आश्विन मास के कृष्ण पक्ष को 'पितृ पक्ष' या 'महालय पक्ष' बोलते हैं। आपका एक माह बीतता है तो पितृलोक का एक दिन होता है। साल में एक बार ही श्राद्ध करने से कुल-खानदान के पितरों को तृप्ति हो जाती है।

श्राद्ध क्यों करें ?

गरुड़ पुराण (१०.५७-५९) में आता है कि 'समयानुसार श्राद्ध करने से कुल में कोई दुःखी नहीं रहता। पितरों की पूजा करके मनुष्य आयु, पुत्र, यश, स्वर्ग, कीर्ति, पुष्टि, बल, श्री, पशुधन, सुख, धन और धान्य प्राप्त करता है।'

'हारीत स्मृति' में लिखा है :

न तत्र वीरा जायन्ते नारोग्यं न शतायुषः ।
न च श्रेयोऽधिगच्छन्ति यत्र श्राद्धं विवर्जितम् ।।

'जिनके घर में श्राद्ध नहीं होता उनके कुल-खानदान में वीर पुत्र उत्पन्न नहीं होते, कोई निरोग नहीं रहता। लम्बी आयु नहीं होती और किसी तरह कल्याण नहीं प्राप्त होता (किसी-न-किसी तरह की झंझट और खटपट बनी रहती है)।'

महर्षि सुमंतु ने कहा : ''श्राद्ध जैसा कल्याण-मार्ग गृहस्थी के लिए और क्या हो सकता है ! अतः बुद्धिमान मनुष्य को प्रयत्नपूर्वक श्राद्ध करना चाहिए।''

श्राद्ध पितृलोक में कैसे पहुँचता है ?

श्राद्ध के दिनों में मंत्र पढ़कर हाथ में तिल, अक्षत, जल लेकर संकल्प करते हैं तो मंत्र के प्रभाव से पितरों को तृप्ति होती है, उनका अंतःकरण प्रसन्न होता है और कुल-खानदान में पवित्र आत्माएँ आती हैं।

'यहाँ हमने अपने पिता का, पिता के पिता का और उनके कुल-गोत्र का नाम लेकर ब्राह्मण को खीर खिलायी, विधिवत् भोजन कराया और वह ब्राह्मण भी दुराचारी, व्यसनी नहीं, सदाचारी है। बाबाजी ! हम श्राद्ध तो यहाँ करें तो पितृलोक में वह कैसे पहुँचेगा ?'

जैसे मनीऑर्डर करते हैं और सही पता लिखा होता है तो मनीऑर्डर पहुँचता है, ऐसे ही जिसका श्राद्ध करते हो उसका और उसके कुल-गोत्र का नाम लेकर तर्पण करते हो कि 'आज हम इनके निमित्त श्राद्ध करते हैं' तो उन तक पहुँचता है। देवताओं व पितरों के पास यह शक्ति होती है कि दूर होते हुए भी हमारे भाव और संकल्प स्वीकार करके वे तृप्त हो जाते हैं। मंत्र और सूर्य की किरणों के द्वारा तथा ईश्वर की नियति के अनुसार वह आंशिक सूक्ष्म भाग उनको पहुँचता है।

आंशिक सूक्ष्म भाग उनको पहुँचता है।

'महाराज ! यहाँ खिलायें और वहाँ कैसे मिलता है ?'

भारत में रुपये जमा करा दें तो अमेरिका में डॉलर और इंग्लैंड में पाउंड होकर मिलते हैं। जब यह मानवीय सरकार, वेतन लेनेवाले ये कर्मचारी तुम्हारी मुद्रा (करंसी) बदल सकते हैं तो ईश्वर की प्रसन्नता के लिए जो प्रकृति काम करती है, वह ऐसी व्यवस्था कर दे तो इसमें ईश्वर व प्रकृति के लिए क्या बड़ी बात है ! आपको इस बात में संदेह नहीं करना चाहिए।

जैसी भावना वैसा फल

देव, पितर, ऋषि, मुनि आदि सभीमें भगवान की चेतना है। निष्काम भाव से उनको तृप्ति कराने से भगवान में प्रीति होगी। सकाम भाव से उनको तृप्ति कराने से कुल-खानदान में अच्छी आत्माएँ आयेंगी। भगवान ने ५ हजार से भी अधिक वर्ष पहले कहा था :

यान्ति देवव्रता देवान्पितॄन्यान्ति पितृव्रताः ।
भूतानि यान्ति भूतेज्या यान्ति मद्याजिनोऽपि माम् ।।

'देवताओं को पूजनेवाले देवताओं को प्राप्त होते हैं, पितरों को पूजनेवाले पितरों को प्राप्त होते हैं, भूतों को पूजनेवाले भूतों को प्राप्त होते हैं और मेरा पूजन करनेवाले भक्त मुझको ही प्राप्त होते हैं। इसलिए मेरे भक्तों का पुनर्जन्म नहीं होता।' (गीता : ९.२५)

प्रतिमा, मंत्र, तीर्थ, देवता एवं गुरु में जिसकी जैसी बुद्धि, भावना होती है, उसे वैसा फल मिलता है। पितृलोक में जाने की इच्छा से पूजन करता है तो मरने के बाद पितृलोक में जायेगा लेकिन पितरों की भलाई के लिए निष्काम भाव से, कर्तव्यबुद्धि से, भगवान की प्रसन्नता के लिए करता है तो हृदय प्रसन्न होकर उसके हृदय में भगवद्रस तो आयेगा, तड़प बढ़ी तो साकार-निराकार का साक्षात्कार करने में भी सफल होगा।

भूत-प्रेत की सद्गति के लिए कुछ कर लें तो ठीक है लेकिन 'भूत-प्रेत मुझे यह दे दें' ऐसी कामना की और उनके प्रति स्थायी श्रद्धा और चिंतन हो गया तो भूतानि यान्ति भूतेज्या... 'भूतों को पूजनेवाले (मरने के बाद) भूतों को प्राप्त होते हैं।' (गीता : ९.२५)

श्राद्ध फलित होने का आसान प्रयोग

स्वधा देवी पितरों को तृप्त करने में सक्षम है। तो उसी देवी के लिए यह मंत्र उच्चारण करना है। श्राद्ध करते समय यह मंत्र ३ बार बोलने से श्राद्ध फलित होता है :

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं स्वधादेव्यै स्वाहा ।

जो जाने-अनजाने रह गये हों, जिनकी मृत्यु की तिथि का पता न हो, उनका भी श्राद्ध-तर्पण सर्वपित्री अमावस्या को होता है।

(श्राद्ध से संबंधित विस्तृत जानकारी हेतु आश्रम से प्रकाशित पुस्तक 'श्राद्ध-महिमा' पढ़ें।)

'सामूहिक श्राद्ध' का लाभ लें

सर्वपित्री दर्श अमावस्या (३० सितम्बर २०१६) के दिन विभिन्न स्थानों के संत श्री आशारामजी आश्रमों में 'सामूहिक श्राद्ध' का आयोजन होता है, जिसमें आप सहभागी हो सकते हैं। इस हेतु अपने नजदीकी आश्रम में २३ सितम्बर तक पंजीकरण करा लें। अधिक जानकारी हेतु पहले ही अपने नजदीकी आश्रम से सम्पर्क कर लें।

अगर खर्चे की परवाह न हो तो अपने घर में भी श्राद्ध करा सकते हैं।

गौमाता की बुद्धिमत्ता व संवेदनशीलता

मातरः सर्वभूतानां गावः सर्वसुखप्रदाः ।

'गौएँ सम्पूर्ण प्राणियों की माता कहलाती हैं । वे सबको सुख देनेवाली हैं ।'

(महाभारत, अनुशासन पर्व : ६९.७)

गौमाता प्रेम, दया, त्याग, संतोष, सहिष्णुता एवं वात्सल्य की साक्षात् मूर्ति है । गोवंश में बुद्धिमत्ता तथा सोचने-समझने की क्षमता होती है । इसका सबसे सरल उदाहरण यह है कि पचास गायों को एक साथ खड़ी करके किसी एक गाय के बछड़े को छोड़ा जाय तो वह दौड़कर अपनी माँ के पास पहुँच जाता है । जबकि भैंस का पाड़ा कई भैंसों की लातें खाता हुआ भी अपनी माँ के पास नहीं पहुँच पाता । उसे मालिक ही उसकी माँ के पास ले जाता है । भैंस का दूध पीनेवाला पाड़ा इतना मूर्ख होता है और गाय का दूध पीनेवाला बछड़ा इतना अक्लवाला होता है !

अपने बच्चों की बुद्धि बढ़ाने की चाहवाले प्रयत्न करके बच्चों को देशी गाय का दूध उपलब्ध करायें । देशी गाय का दूध पीनेवाले बच्चे पाड़ों की नाईं झगड़ाखोर, स्वार्थी नहीं होते । भैंस खुराक देखकर दूध देती है जबकि गाय बछड़े को देख के ही दूध उतारती है । गाय स्नेही है, भैंस स्वार्थी है । ये गुण-अवगुण उनके दूध में से उनके बच्चों में भी आते हैं और अपने बच्चों में भी आते हैं ।

घर के बाहर गाय के आने की खबर बछड़े को हो जाती है और वह अपने-आप ही रँभाने लग जाता है । दूध दुहते समय बछड़े को छुड़ाकर दूर बाँधने के बाद भी गाय दूध देती रहती है । मालिक बाहर से घर आये तो गाय खुश होकर उसको चाटने लगती है । गाय का गर्भकाल भी मानव के समान लगभग ९ माह का है ।

कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के प्रो. डोनाल्ड ब्रूम ने एक अध्ययन में गायों को एक ऐसी जगह रखा, जहाँ उन्हें चारा हासिल करने के लिए दरवाजा खोलना था । उनकी दिमागी तरंगों को एक यंत्र के माध्यम से मापा गया । इससे पता चला कि वे इस चुनौती को लेकर काफी उत्साहित थीं । जब यह पहेली सुलझाने में कामयाबी मिली तो कुछ गायें तो उत्साहित होकर उछल पड़ीं ।

उनमें एक-दूसरों को देखकर सीखने की क्षमता भी होती है तथा सीखी हुई बात वे कभी नहीं भूलतीं । वे बहुत जल्दी सीख जाती हैं कि बिजली के तारों की बाड़ और दूसरी चीजें जिनसे शरीर को चोट लगे उनसे दूर कैसे रहा जाय । वे अपने बाड़ों को अच्छी तरह से जानती हैं और अपनी पसंदीदा जगह पर जाने का रास्ता आसानी से खोज लेती हैं । इनकी गंध पहचाननेवाली इन्द्रियाँ काफी सक्रिय तथा स्मरणशक्ति काफी प्रभावी होती है । वे जानती हैं कि किस वक्त उन्हें चारा दिया जायेगा तथा कब दूध दुहा जायेगा ।

गाय के ये बुद्धिमत्ता, संवेदनशीलता आदि गुण केवल भारतीय गोवंश में देखने को मिलते हैं, गाय की तरह दिखनेवाले विदेशी पशुओं में नहीं । इसलिए भारतीय नस्ल की गायों का दूध पीनेवालों में बुद्धिमत्ता, संवेदनशीलता, दया, प्रेम आदि का विकास होता है और वे ओजस्वी-तेजस्वी बनते हैं । (शेष पृष्ठ २९ पर)
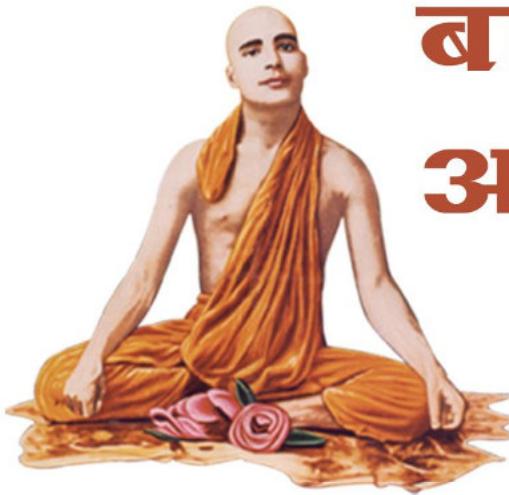
बालक तीर्थराम का अगाध सत्संग-प्रेम

बालक तीर्थराम जब एक वर्ष के थे तभी उनकी माँ का देहांत हो गया था। उनका पालन-पोषण उनकी बूआ ने किया था, जो एक धर्मपरायण महिला थीं। वे प्रतिदिन बालक को मंदिर ले जातीं। बालक के मन पर वहाँ के सात्त्विक वातावरण का अत्यधिक प्रभाव पड़ा। शंख-ध्वनि से तीर्थराम को इतना प्रेम था कि उसको सुनकर वह रोना भूल जाता और एकदम शांत हो जाता।

तीर्थराम के पिता कहते थे कि ''जब राम (तीर्थराम) तीन वर्ष का था तब एक दिन संध्या के समय मैं उसे लेकर सत्संग में गया। उसके लिए सत्संग समझना एक प्रकार से असम्भव था परंतु वह अत्यंत शांत मुद्रा में बैठकर संत की ओर अपलक नेत्रों से देख रहा था। दूसरे दिन जब सत्संग प्रारम्भ हेतु शंख की ध्वनि हुई तो राम फूट-फूट के रोने लगा। घरवाले उसके रोने का कारण समझ नहीं सके। उसे चुप कराने के लिए मिठाइयाँ और खिलौने दिये परंतु उसने सारी वस्तुएँ फेंक दीं और उसका रोना-चिल्लाना चालू ही रहा। अंत में उसे गोद में उठाकर मैं सत्संग-स्थल की ओर चला। ज्यों-ज्यों उस स्थान की ओर बढ़ता, त्यों-त्यों वह शांत होता गया। ज्यों ही मैं रुकता, उसका रोना-चीखना शुरू हो जाता। वहाँ पहुँचने पर वह अत्यधिक आह्लादित और शांत हो गया। इतना ही नहीं, वह टकटकी लगाकर संत की तरफ देखने लगा।''

उम्र के साथ तीर्थराम का सत्संग के प्रति प्रेम भी बढ़ता गया। चार साल में तो वे अकेले ही सत्संग सुनने जाने लगे। एकांत से उन्हें खूब अनुराग था तथा वृत्ति बचपन से ही अंतर्मुखी थी। वे प्रायः एकांत में चिंतन में मग्न रहने लगे।

६ वर्ष की उम्र में उन्हें प्रारम्भिक पाठशाला में भर्ती कराया गया। तीर्थराम को स्वाध्याय के प्रति असीम अनुराग था। प्रातःकाल का समय वे अध्ययन, चिंतन, ध्यान में व्यतीत करते। विद्यार्थी-जीवन में भी उनका सत्संग के प्रति अनुराग बना रहा। पाठशाला के पास की धर्मशाला में प्रतिदिन दो बजे सत्संग होता था। एक बार उन्होंने अपने अध्यापक से सत्संग में जाने की अनुमति माँगी परंतु उन्होंने इनकार कर दिया। इससे तीर्थराम की आँखों में आँसू आ गये। उन्होंने करुण भाव से प्रार्थना की : ''साहब ! मुझे सत्संग में जाने दीजिये। मैं एक घंटेवाले अवकाश में पाठशाला का सारा काम पूरा कर लूँगा।'' उनकी इस निष्ठा से अध्यापक महोदय भी पिघल गये और उन्हें सहर्ष आज्ञा दे दी।

बचपन के आध्यात्मिक संस्कारों तथा सत्संग-प्रेम ने बालक तीर्थराम को आगे चलकर ब्रह्मानुभूति की यात्रा करने में सहायता की और वे स्वामी रामतीर्थ के नाम से विश्वविख्यात हुए।

(पृष्ठ २८ से 'गौमाता ...' का शेष) (बापूजी को बचपन से गाय का दूध मिला, अभी भी गाय के दूध का उपयोग करते हैं और उनमें सारे सद्गुण चमचम चमकते हमने व लाखों-करोड़ों साधकों ने देखे-सुने हैं। - सम्पादक)

हमको तो तत्त्वज्ञान चाहिए

स्वामी श्री अखंडानंद सरस्वतीजी बताते हैं :

(उन दिनों की बात है जब) मैं रोज महाराजजी (श्री उड़िया बाबाजी) के साथ बैठकर दूध पीता था, उनके साथ बैठ के भोजन करता था, दिनभर में छः-आठ बार तो उनके पास बैठने का मौका मिलता ही था । जिस दिन बढ़िया भोजन बनाकर उनके सामने परोसा जाता था तो वे इधर-उधर देखते कि 'यह तू ले बेटा ! यह तू ले बेटा !...' बाँटने लग जाते थे । कोई कहता : ''महाराजजी ! आप भोजन क्यों नहीं करते हैं ?''

कहते : ''बेटा ! इतना बढ़िया भोजन देखकर हमारी तो तृप्ति हो गयी । अब भूख रही नहीं । जिस दिन बढ़िया भोजन पकता है, उस दिन हमारी खाने की इच्छा ही नहीं होती है ।''

हमारे वेदांतियों में बड़ी ज्ञानचर्चा होती । हम लोग जीवन्मुक्ति, विदेहमुक्ति - इनको बहुत महत्त्व नहीं देते थे । उस समय ऐसी तीव्रता थी जिज्ञासा में कि हमको तो ब्रह्मज्ञान होना चाहिए । हमको जीवन्मुक्ति नहीं चाहिए, हमको विदेहमुक्ति नहीं चाहिए । कभी-कभी तो महाराज जोश में आकर ऐसे बोल दें कि ''हम हमेशा के लिए नरक में रहने को तैयार हैं; परंतु हमको सत्य का ज्ञान होना चाहिए, हम सत्य के जिज्ञासु हैं, हम ज्ञान के जिज्ञासु हैं । ज्ञान होने पर अगर नरक में रहना पड़े तो हम रहेंगे और बिना ज्ञान के हमको स्वर्ग में जाना हो तो नहीं जायेंगे, हमको तो तत्त्वज्ञान चाहिए ।''
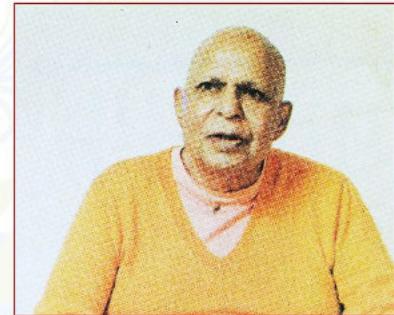
इन तिथियों का लाभ लेना न भूलें

२० सितम्बर : मंगलवारी चतुर्थी (सूर्योदय से दोपहर ११-५९ तक)

२५ सितम्बर : रविपुष्यामृत योग (दोपहर २-३७ से २६ सितम्बर सूर्योदय तक)

२६ सितम्बर : इंदिरा एकादशी (व्रत से बड़े-बड़े पापों का नाश हो जाता है । यह नीच योनियों में पड़े हुए पितरों को भी सद्गति देनेवाली है । इसका माहात्म्य पढ़ने-सुनने से मनुष्य सब पापों से मुक्त हो जाता है । - पद्म पुराण)

२ अक्टूबर : पूज्य संत श्री आशारामजी बापू का ५३वाँ आत्मसाक्षात्कार दिवस

४ अक्टूबर : मंगलवारी चतुर्थी (दोपहर १२-३५ से ५ अक्टूबर सूर्योदय तक)

११ अक्टूबर : विजयादशमी (पूरा दिन शुभ मुहूर्त), विजय मुहूर्त (दोपहर २-२३ से ३-११ तक) (संकल्प, शुभारम्भ, नूतन कार्य, सीमोल्लंघन के लिए), (गुरु-पूजन, अस्त्र-शस्त्र-शमी वृक्ष-आयुध-वाहन पूजन)

१२ अक्टूबर : पापांकुशा एकादशी (उपवास करने से कभी यम-यातना नहीं प्राप्त होती । यह पापों को हरनेवाला, स्वर्ग, मोक्ष, आरोग्य, सुंदर स्त्री, धन एवं मित्र देनेवाला व्रत है । इसका उपवास और रात्रि में जागरण माता, पिता व स्त्री के पक्ष की दस-दस पीढ़ियों का उद्धार कर देता है ।)

हजार नेत्रोंवाले को भी चाहिए ज्ञान के नेत्र

'श्री रामचरितमानस' (अयो.कां. : १८१.१) में संत तुलसीदासजी लिखते हैं :

गुर बिबेक सागर जगु जाना।
जिन्हहि बिस्व कर बदर समाना॥

'गुरु ज्ञान के समुद्र हैं, इस बात को सारा जगत जानता है। उनके लिए विश्व हथेली पर रखे हुए बेर के समान है।'

उनके सामने जो दुःख रखा जाता है वह भी सुख में बदल जाता है। जैसे अर्जुन ने अपना विषाद भगवान श्रीकृष्ण के सामने रखा तो विषादयोग बन गया। इन्द्र के जीवन में भी ऐसा ही एक प्रसंग आता है।

उस समय की बात है जब रामजी १४ वर्ष के वनवास हेतु चले गये। तब भरतजी उन्हें वापस बुलाने जा रहे थे। न तो उनके पैर में जूते हैं और न सिर पर छाया। वे सखा निषादराज से सीताजी, रामजी व लक्ष्मणजी की रास्ते की बातें पूछते हैं। रामजी जहाँ ठहरे थे वहाँ के वृक्षों को देखकर उनके हृदय में प्रेम रोके नहीं रुकता। भरतजी के इस अनन्य प्रेम को देख इन्द्र को चिंता हो गयी कि 'कहीं इनके प्रेमवश रामजी लौट न जायें और हमारा बना-बनाया काम बिगड़ न जाय।'

सभी देवता रावण के अत्याचार से त्रस्त थे और धरती का भार उतारने के लिए ही भगवान ने अवतार लिया था। रामजी देवताओं के कार्य अर्थात् दुष्टों के विनाश हेतु वनवास पर गये थे। इन्द्र को भय था कि 'कहीं रामजी लौट गये तो राक्षसों का विनाश कैसे होगा ? इसलिए इन्द्र ने गुरु बृहस्पतिजी से कहा : ''हे प्रभु ! वही उपाय कीजिये जिससे श्रीरामजी और भरतजी की भेंट ही न हो। रामजी प्रेम के वश हैं और भरतजी प्रेम के समुद्र हैं। बनी-बनायी बात बिगड़ न जाय इसलिए कुछ छल ढूँढ़कर इसका उपाय कीजिये।''

इन्द्र के वचन सुनते ही देवगुरु मुस्कराये। उन्होंने हजार नेत्रोंवाले इन्द्र को (ज्ञानरूपी) नेत्रों से रहित समझा और कहा : ''हे देवराज ! माया के स्वामी श्रीरामजी के सेवक के साथ जो माया करता है तो वह उलटकर उसके ही ऊपर आ पड़ती है। कुचाल करने से हानि ही होगी। रघुनाथजी का स्वभाव सुनो, वे अपने प्रति किये हुए अपराध से कभी रुष्ट नहीं होते पर जो कोई उनके भक्त का अपराध करता है वह रामजी की क्रोधाग्नि में जल जाता है।

सारा जगत रामजी को जपता है और वे रामजी जिनको जपते हैं, उन भरतजी के समान रामजी का प्रेमी कौन होगा ? रामजी के भक्त का काम बिगाड़ने की बात मन में भी न लाइये। ऐसा करने से इस लोक में अपयश और परलोक में दुःख होगा तथा शोक का सामान दिनोंदिन बढ़ता ही चला जायेगा। रामजी को अपना सेवक परम प्रिय है। वे अपने सेवक की सेवा से सुख मानते हैं और सेवक के साथ वैर करने से बड़ा भारी वैर मानते हैं। अतः कुटिलता छोड़ दो।

रामजी के भक्त सदा दूसरों के हित में लगे रहते हैं, वे दूसरों के दुःख से व्यथित और दयालु होते हैं। भरतजी तो भक्तों में शिरोमणि हैं, उनसे बिल्कुल न डरो। रामजी सत्यप्रतिज्ञ और देवताओं का हित करनेवाले हैं एवं भरतजी रामजी की आज्ञा के अनुसार चलनेवाले हैं। तुम व्यर्थ ही स्वार्थ के विशेष वश होकर व्याकुल हो रहे हो। इसमें भरतजी का कोई दोष नहीं, तुम्हारा ही मोह है।''

इस प्रकार गुरुदेव बृहस्पतिजी का सत्संग सुनकर इन्द्र के मन में बड़ा आनंद हुआ और उनकी चिंता मिट गयी।

घोर निराशा में आशा का झरना :

भगवन्नाम

क्रांतिकारियों के मुकदमों की पैरवी में सहयोग देने से श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार - 'भाईजी' (गीता प्रेस, गोरखपुर की कल्याण पत्रिका के आद्य सम्पादक) को अंग्रेजों ने बंदी बना लिया था । उस समय उनका विवाह हुए तीन महीने भी नहीं हुए थे तथा घर में अकेली स्त्रियाँ थीं । यह स्थिति एवं कारावास की अवधि की अनिश्चितता के बारे में सोचकर वे घबरा गये । भाईजी स्वयं लिखते हैं :

'हृदय में दुःख व व्याकुलता छा गयी, चारों ओर अंधकार दिखाई पड़ता था । कोई सहारा न मिला तो अंत में मुझे उस परम पिता परमेश्वर का नाम स्मरण हो आया । मैंने नाम की रट लगा दी । धीरे-धीरे व्याकुलता दूर हो गयी, हृदय में शांति का साम्राज्य छा गया । मुझे भगवन्नाम का माहात्म्य मालूम हुआ । मेरी उन्नति का प्रथम सूत्रपात यहीं से हुआ ।'
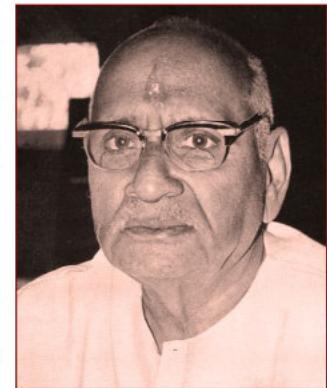
ठोस आधार न मिलने से राजद्रोह का मुकदमा नहीं बन पाया और उनको अनिश्चित काल के लिए शिमलापाल ग्राम में नजरबंदी का आदेश हुआ । उन दिनों भाईजी प्रातः तीन-चार बजे उठ जाते एवं ३० माला जप करके स्नान करते फिर संध्या-वंदन, ध्यान आदि करते । वृत्ति ध्येयाकार बनकर ध्यान का इतना सुंदर अभ्यास हो गया कि प्रातः, दोपहर एवं रात्रि में तीन-तीन घंटे ध्यान में बीतने लगे । शेष समय भगवन्नाम-जप एवं स्वाध्याय में लगाते । बहुत कम समय में शरीर के आवश्यक कार्यों से निवृत्त होकर शेष सारा समय इसी तरह साधना में व्यतीत करते ।

जप में इतना रस आने लगा कि नाम-जप छूटना सहन नहीं होता था । उनके मन में आता कि 'कोई मुझसे बात न करे एवं यदि आवश्यक बात करनी ही पड़े तो मुझे बोलना न पड़े ।' जीभ सतत जप में लगी रहती । जब कभी आनेवाला व्यक्ति बहुत देर बैठ जाता तो विनम्र शब्दों में बोल देते : "देखिये, मैं तो निकम्मा आदमी हूँ, बहुत देर हो गयी । आपको काम होगा, अतः आप पधारिये ।"

एक बार इन्हें समाचार मिला कि इनकी दादीजी कलकत्ता में बीमार हैं एवं इनसे मिलना चाहती हैं । इनकी उनसे मिलने की तीव्र इच्छा हो गयी । सरकार को तार दिया पर अस्वीकृति आ गयी । ये व्याकुल हुए एवं भगवन्नाम-जप शुरू किया । उसी दिन एक मुसलमान उप-जिलाधिकारी (डिप्टी कलेक्टर) मुआयना करने आये, उनको भाईजी ने सारी बातें कहीं । वे बड़े सहृदय थे, उन्होंने कहा : "आपके लिए कल ही ऑर्डर आ जायेगा ।"

ऑर्डर राज्यपाल (गवर्नर) ही दे सकता था अतः इन्हें विश्वास नहीं हुआ । वे भगवन्नाम-जप में लग गये । दूसरे ही दिन सात दिन के लिए पेरोल पर जाने की अनुमति मिल गयी । ये आश्चर्यचकित हो भगवत्कृपा का अनुभव करते हुए उसीमें डूब गये । अंततः सरकार को २१ माह के बाद उन्हें छोड़ना पड़ा ।

भगवन्नाम में अमोघ शक्ति है । कभी तत्काल तो कभी कुछ समय लेकर वह साधक, जापक, प्रार्थी को फल अवश्य देता है ।

भक्तों के अनुभव

ऋषि प्रसाद न होती तो क्या होता !

मुझे 'ऋषि प्रसाद' की सेवा करने का सौभाग्य मिला है। मेरा बेटा १८ मई २०१६ को एक रिश्तेदार की शादी से रात के १ बजे वापस लौट रहा था। अचानक ऐसा एक्सीडेंट हुआ कि बी.एम.डब्ल्यू. गाड़ी पूरी चूरचूर हो गयी। गाड़ी जिस तरफ जा रही थी उसके विपरीत दिशा में पलटी हुई मिली, मानो किसीने खींचकर पलट दिया हो। साथ बैठे अन्य लोगों को गम्भीर चोटें आयीं पर मेरे बेटे को केवल मामूली-सी खरोंच आयी थी। लोगों का कहना है कि जहाँ यह दुर्घटना हुई थी वहाँ कोई प्रेतात्मा भटकती है और वही एक्सीडेंट करवाती है। इससे पूर्व वहाँ दुर्घटनाओं में कई लोग काल के गाल में चले गये पर मेरा बेटा बच गया क्योंकि गाड़ी में 'ऋषि प्रसाद' का एक अंक रखा था जिस कारण उस आसुरी शक्ति का जोर नहीं चला। मेरा दृढ़ विश्वास है कि गुरुदेव का श्रीचित्र साथ हो तो कोई अमंगल नहीं होता है।

- मीना बेन गोहिल, वांकानेर, सूरत, सचल दूरभाष : ०९६८७९७१४३६

धैर्य, आत्मविश्वास व याददाश्त में असामान्य वृद्धि

पूज्य बापूजी से दीक्षा लेने से पहले मुझे कुछ भी याद नहीं रहता था और न पढ़ाई में मन लगता था। मैंने पूज्यश्री से २००९ में सारस्वत्य मंत्र की दीक्षा ली और प्रतिदिन मंत्रजप एवं त्राटक करने लगी। तालू में जीभ लगाकर माला करने से मुझे सब याद रहने लगा। जप करने से मुझे बड़ी शांति मिलती है। मन में धैर्य बना रहता है, मेरा आत्मविश्वास मजबूत हुआ है। मुझे किसी प्रकार का कोई टेंशन नहीं रहता, याददाश्त पहले की तुलना में बहुत अच्छी हो गयी है। मैं विभिन्न पुण्यदायी तिथियों पर विशेष रूप से और ज्यादा माला करती हूँ। पूज्य बापूजी की ध्यान की सीडी सुनते-सुनते ध्यानमग्न हो जाती हूँ।

मैं स्कूल में हर साल फर्स्ट आती हूँ। इस साल मुझे कक्षा १० में ९७.४४ प्रतिशत अंक मिले हैं। मैं प्रार्थना करती हूँ कि बापूजी जल्दी से बाहर आयें और मेरे जैसे बच्चों को दीक्षा दे के उद्धार करें।

- काव्या कट्टीकनी, बेंगलुरु, सचल दूरभाष : ०८७६२७६६३५९

गुरुकृपा से बनी देश की 'सर्वश्रेष्ठ सरपंच'

मुझे बापूजी के सत्संग व मंत्रदीक्षा से लोगों की सेवा तथा समाज की भलाई के संस्कार मिले थे । २०१० में मैं ग्राम-पंचायत की सरपंच बनी । मैंने गाँव का विकास करने की ठानी और तन-मन से जुट गयी । गाँव की सभी समस्याओं के समाधान हेतु अथक प्रयास करके गाँव को विकसित किया । गाँव को व्यसनमुक्त बनाने हेतु हर सम्भव प्रयास किया और गुरुकृपा से मुझे सफलता भी मिली ।

इन प्रयासों से शासन द्वारा अच्छे कार्यों के लिए हमारी ग्राम-पंचायत को छत्तीसगढ़ से पंचायत महिला सशक्तीकरण हेतु चुना गया, सराहना हुई तथा पुरस्कृत किया गया । बापूजी द्वारा बताये गये मार्ग पर चलते हुए मैंने ईमानदारीपूर्वक अपने कर्तव्य को निभाया । इससे मुझे प्रधानमंत्री एवं राष्ट्रपति द्वारा 'सर्वश्रेष्ठ सरपंच' का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला तथा ग्राम-पंचायत के विकास हेतु पुरस्कार में ८ लाख रुपये प्रदान किये गये ।

समाज-सेवा की प्रेरणा तथा सफलता देनेवाले गुरुदेव को मेरे कोटि-कोटि प्रणाम !

- उषा साहू, ग्राम गौरमाटी, जिला कबीरधाम (छ.ग.), सचल दूरभाष : ०९१११३५०६११

इस तरह हमें मिला प्राणदान

एक बार मैं और मेरी माँ इंदौर से शिवपुरी जा रहे थे । सुबह लगभग ४.३० बजे बदरवास स्टेशन पर सामने से आती हुई मालगाड़ी से हमारी ट्रेन की जोरदार टक्कर हो गयी । उस समय मैं ऊपर की बर्थ पर सो रहा था और माताजी नीचे बैठी थीं । दुर्घटना के कुछ पल पहले मुझे ऐसा लगा जैसे ट्रेन नदी में गिर रही हो । तभी अंतर्मन से पुकार निकली, 'ॐ ॐ बापूजी ! रक्षा कीजिये ।' उठकर नीचे देखा तो मेरे आसपास १०-१५ लाशें पड़ी हुई थीं, चारों ओर खून-ही-खून फैला था । हमारे डिब्बे में लगभग २६ लोग मौत की नींद सो चुके थे । चारों तरफ अँधेरा और हाहाकार मचा था । मुझे मेरी माताजी की चिंता हुई कि उनको तो कुछ नहीं हुआ ? तभी उनकी आवाज आयी : ''सुनील ! क्या हुआ ?''

मैंने कहा : ''एक्सीडेंट हुआ है ।'' वे लगभग १० फीट दूर सुरक्षित खड़ी थीं ।

बोलीं : ''मुझे तो कुछ पता ही नहीं चला !''

''आप इतनी दूर कैसे पहुँचीं ?''

''एक सफेद वस्त्रधारी महात्मा ने मुझे पकड़कर इधर खड़ा कर दिया ।'' वे सफेद वस्त्रधारी मेरे बापूजी ही थे । हमको प्राणदान देनेवाले पूज्य बापूजी को मेरा यह जीवन अर्पित है । मैं 'ऋषि प्रसाद' के सदस्य बनाने की सेवा का सौभाग्य पा रहा हूँ और जब तक जीवित रहूँगा तब तक 'ऋषि प्रसाद' की सेवा करता ही रहूँगा । जीवनदाता सद्गुरु को लाख-लाख बार दंडवत् प्रणाम !

- सुनील माथुर, शिवपुरी (म.प्र.), सचल दूरभाष : ०९३०००११३६१

गुणों व खनिजों का खजाना : चौलाई

हरी सब्जियों में उच्च स्थान प्राप्त करनेवाली चौलाई एक श्रेष्ठ पथ्यकर तथा अनेक खनिजों का खजाना है। आयुर्वेद के 'भावप्रकाश निघंटु' के अनुसार यह हलकी, शीतल, रुक्ष, रुचिकारक, अग्निदीपक एवं मूत्र व मल को निकालनेवाली तथा पित्त, कफ, रक्तविकार व विष को दूर करनेवाली होती है।

चौलाई की मुख्य दो किस्में होती हैं - लाल और हरी। लाल चौलाई ज्यादा गुणकारी होती है।

चौलाई में कैल्शियम, फॉस्फोरस, लौह, विटामिन 'ए' व 'सी' प्रचुर मात्रा में होते हैं। गर्भिणी तथा स्तनपान करानेवाली माताओं को इसका सेवन अवश्य करना चाहिए। इसमें रेशे होने के कारण यह आँतों में चिपके हुए मल को अलग करती है। पुराने कब्ज में भी लाभदायी है। चौलाई रक्त शुद्ध करनेवाली, अरुचि को दूर कर पाचनशक्ति को बढ़ानेवाली, त्वचा के विकार व गर्मी के रोगों में बहुत गुणकारी है।

यह नेत्रों के लिए हितकारी, मातृदुग्धवर्धक एवं रक्तप्रदर, श्वेतप्रदर आदि स्त्रीरोगों में लाभकारी है। चौलाई की सब्जी खून की कमी, शीतपित्त, रक्तपित्त, बवासीर, पुराना बुखार, संग्रहणी, गठिया, उच्च रक्तचाप, हृदयरोगों तथा बाल गिरने आदि बीमारियों में भी लाभदायक है।

चौलाई की भाजी को केवल उबालकर या घी का बघार दे के तैयार करें।

औषधीय प्रयोग

* शरीर की गर्मी व जलन : चौलाई के ५० मि.ली. रस में मिश्री मिलाकर पीने से खुजली और गर्मी दूर होती है। हाथ-पैर के तलवों व पेशाब की जलन में लाभ होता है।

* रक्तपित्त : चौलाई का रस शहद के साथ सुबह-शाम पीने से रक्तपित्त में लाभ होता है तथा नाक, गुदा आदि स्थानों से निकलनेवाला खून बंद हो जाता है।

* नेत्ररोग : आँखों से कम दिखना, आँखें लाल हो जाना, जलन, रात्रि को न दिखना आदि तकलीफों में चौलाई का रस ५०-६० मि.ली. प्रतिदिन दें अथवा चौलाई को सब्जी के रूप में उपयोग करें।

* पित्त-विकृति : पित्त-विकृति में चौलाई की सब्जी खाते रहने से बहुत लाभ होता है।

स्वास्थ्यप्रद सरल घरेलू नुस्खे

उष्णता व पित्त का शमन आदि : कच्चे नारियल की गिरी के २-३ टुकड़ों के साथ १-२ बताशे कुछ दिनों तक रोज खाने से चेहरे एवं त्वचा का रंग निखरता है, उष्णता एवं पित्त का शमन होता है और बाल घने व लम्बे होते हैं।

शरीर का भीतरी दाह : भिगोयी हुई द्राक्ष और मिश्री प्रातःकाल खाने से लाभ होता है।

आँखों के आस-पास का कालापन : १-१ चम्मच मुलतानी मिट्टी, खीरे का रस और आलू का रस मिलाकर आँखों के पास लेप करें।

स्वप्नदोष : १० ग्राम ग्वारपाठे का गूदा, १ ग्राम काली मिर्च का चूर्ण व सेंधा नमक मिला के शुद्ध देशी घी के साथ सेवन करने से लाभ होता है।

स्वरयोग विज्ञान : महत्ता व उपयोग

(गतांक से आगे)

विविध क्रियाओं में स्वरों का प्रभाव

मनुष्य को शांतिपूर्ण व उत्साहपूर्ण - दोनों तरह के कार्य करने होते हैं । विवेकी पुरुष अपने कार्य को आरम्भ करने से पूर्व यह देख लेते हैं कि हमारे शरीर और मन की स्वाभाविक स्थिति इस प्रकार के कार्य के अनुकूल है या नहीं ।

जब हम शांत, स्थिर व अंतर्मुख होते हैं उस समय प्रायः चन्द्र स्वर सक्रिय रहता है । चन्द्र स्वर की सक्रियता के समय चिंतन, मनन और विचार करने की क्षमता बढ़ती है, अतः इस समय मानसिक क्रियाकलाप आसानी से होते हैं । विवेकपूर्ण और स्थायी कार्य, जैसे - दान, नवीन वस्त्र-धारण, शांति व पुष्टि के काम, शपथ लेना, औषधि देना, रसायन बनाना, विद्यारम्भ, मैत्री, व्यापार, बीज बोना, दूर की यात्रा, धर्म, यज्ञ, मंत्र, विद्याभ्यास, योग क्रिया आदि में अधिक गम्भीरता और बुद्धिपूर्वक कार्य करने की आवश्यकता होती है । इसलिए इनका आरम्भ भी ऐसे ही समय में होना चाहिए जब शरीर के सूक्ष्म कोष चन्द्रमा की शीतलता को ग्रहण कर रहे हों अर्थात् चन्द्र स्वर चालू हो ।

उसी प्रकार जब सूर्य स्वर चल रहा हो तब शारीरिक क्षमता अधिक होती है । अतः इस समय शारीरिक श्रम अथवा बाह्य प्रवृत्तियों के कार्य करें तो वे ठीक से होते हैं । जोश के साथ करने पर जो कार्य ठीक होते हैं, उनके लिए सूर्य स्वर उत्तम कहा गया है ।

कुछ क्षण के लिए जब दोनों नाड़ियाँ चलती हैं (सुषुम्ना स्वर सक्रिय रहता है), तब प्रायः शरीर संधि की अवस्था में होता है । यह संध्याकाल है । दिन के उदय, अस्त व मध्याह्न के समय को भी संध्याकाल कहते हैं । इस समय जन्म या मरणकाल के समान पारलौकिक भावनाएँ जागृत होती हैं और संसार की ओर से विरक्ति, उदासीनता एवं अरुचि होने लगती है । स्वर की संध्या से भी चित्त कुछ आत्मचिंतन की ओर झुकता है । इस समय परमार्थ-चिंतन और ईश्वर-आराधना का अभ्यास करने से निःसंदेह उसमें बहुत उन्नति हो सकती है किंतु सांसारिक कार्यों के लिए यह स्थिति उपयुक्त नहीं है । सुषुम्ना की सक्रियता की दशा में मानसिक विकार दब जाते हैं और गहरे आत्मिक भाव का थोड़ा-बहुत उदय होता है । इस समय जब कोई वरदान देता है तो उन भावनाओं के साथ आत्मतत्त्व का बहुत कुछ सम्मिश्रण होने से उनका प्रभाव विशेष बढ़ जाता है । (क्रमशः)

भोजन को औषधि बनाने की युक्ति - पूज्य बापूजी

आप बीमार न हों तो अच्छा है लेकिन बीमार हों और कोई औषधि लें तो दायें हाथ में औषधि ले के २१ बार 'ॐ नमो नारायणाय' जपकर ही लें । और बायाँ स्वर चलता हो उस समय औषधि लेने से ज्यादा फायदा होता है । वृद्धों को तो ऐसा खास करना चाहिए । हम तो चाहते हैं कि आप भोजन को भी औषधि बनाकर खाओ, जल भी पियो तो उसे औषध बनाकर पियो । भोजन करने या पानी पीने से पहले 'ॐ नमो नारायणाय...' २१ बार जपने से दोनों काम हो गये - भगवान की भक्ति की भक्ति हो गयी और औषधि भी बन गयी । भोजन दायाँ स्वर चलता हो तभी या उसे चालू करके करना चाहिए । इससे विशेष लाभ होता है ।

गतांक की 'ऋषि प्रसाद प्रश्नोत्तरी' के उत्तर

(१) बंधन व दुःख (२) भयभीत आदमी (३) ८ गुना (४) ध्यान-भजन व ईश्वरीय सुख दिलाने में परम हितकारी 'शून्य स्वर'

सुप्रसिद्ध न्यायविद् डॉ. सुब्रमण्यम स्वामी ने ट्विटर पर कहा :
२१वीं सदी में सबसे बड़ी भारतीय न्यायिक चूक है ७९ साल के संत आशारामजी बापू को न्यायालय द्वारा जमानत से निरंतर इनकार । केस बोगस है !

रक्षाबंधन को बनाया समाज-रक्षा एवं उत्थान का माध्यम

पूज्य बापूजी की प्रेरणा से देशभर के महिला उत्थान मंडलों ने स्थानीय कारागृहों में जाकर रक्षाबंधन का पर्व मनाया एवं विभिन्न कार्यक्रम किये । साधिकाओं ने न केवल कैदी भाइयों की सूनी कलाइयाँ सजायीं बल्कि उनके खिन्न, निराश हृदयों को भी प्रसन्नता व शुभ संकल्पों से भर दिया । उन्हें मिठाई खिलाने के साथ ही भजन-कीर्तन, हास्य-प्रयोग आदि के माध्यम से भगवद्-आनंद का रसपान भी कराया गया । कैदियों को अपने स्वास्थ्य, आचरण व विचारों को उन्नत बनाने का मार्गदर्शन दिया गया तथा 'नशे से सावधान', 'मधुर व्यवहार', 'तू गुलाब होकर महक', 'निरोगता का साधन', 'ईश्वर की ओर' आदि जीवनोद्धारक सत्साहित्य भी भेंट किया गया । इन कार्यक्रमों में शुभ संकल्पों व शुभ भावों का असर प्रत्यक्ष देखने को मिला । कैदियों की आँखें हर्ष के आँसुओं से छलक पड़ीं । कैदियों ने दुर्व्यसनों व हलके कर्मों से बचने तथा सन्मार्ग पर चलने का संकल्प लिया । जेल-प्रशासन ने पूज्य बापूजी व महिला उत्थान मंडलों के प्रति बहुत-बहुत आभार प्रकट किया तथा ऐसे कार्यक्रम समय-समय पर आयोजित करने की जरूरत बतायी । कुष्ठाश्रमों, वृद्धाश्रमों, बाल-सुधारगृहों, नेत्रहीन, विकलांग व मूक-बधिर संस्थानों में भी वैदिक रीति से रक्षाबंधन मनाया गया ।

विद्यालयों में जाकर विद्यार्थियों को रक्षाबंधन पर्व के वास्तविक उद्देश्य से परिचित कराया गया तथा अपने सहपाठियों व पड़ोस के भाई-बहनों के प्रति पवित्र भाव रखने की प्रेरणा दी गयी । महिला उत्थान मंडल की बहनों द्वारा रायपुर में छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह एवं कृषि व जल संसाधन मंत्री श्री बृजमोहन अग्रवाल को तथा भिलाई जि. दुर्ग में एस.ए.एफ. के जवानों को वैदिक रीति से रक्षासूत्र बाँधा गया ।

(उपरोक्त कार्यक्रमों की तस्वीरों हेतु देखें आवरण पृष्ठ २ व ४)

रक्षाबंधन पर्व पर सभी संत श्री आशारामजी आश्रमों में साधकों ने अपने गुरुदेव को मानसिक रूप से रक्षासूत्र बाँधकर गुरुदेव के उत्तम स्वास्थ्य एवं शीघ्र रिहाई हेतु संकल्प किया तथा अपने आध्यात्मिक खजाने की रक्षा हेतु प्रार्थना की । कई आश्रमों में यज्ञोपवीत बदलने के सामूहिक कार्यक्रम भी सम्पन्न हुए ।

काँवरियों (शिवभक्तों) की सेवा

युवा सेवा संघ द्वारा काँवरियों (शिवभक्तों) की सेवा के लिए देशभर में भंडारे, प्रसाद व सत्साहित्य वितरण आदि कार्य किये गये।

युवाओं ने निकालीं देशभक्ति यात्राएँ

बड़ी-बड़ी कुरबानियाँ देने के बाद हमारे देश को आजादी मिली थी। विदेशी ताकतों के संस्कृति व देश को तोड़ने के षड्यंत्रों में फँसकर हम इस स्वतंत्रता को कहीं खो न बैठें, अतः हर देशप्रेमी को इन षड्यंत्रों को समझना होगा और देश-संस्कृति के प्रति अपने कर्तव्य को निभाना होगा। इस संदेश को लेकर युवा सेवा संघ द्वारा देशभक्ति व संस्कृतिप्रेम जगानेवाली यात्राएँ स्वतंत्रता दिवस के निमित्त निकाली गयीं।

(तस्वीरों हेतु देखें आवरण पृष्ठ ४)

नेपाल में हुए निःशुल्क चिकित्सा शिविर एवं योग-प्रशिक्षण कार्यक्रम

नेपाल में जोगडा, परसाहवा जि. रुपंदेही, रामनगर जि. नवलपरासी, मंगलपुर जि. चितवन, निजगढ़, खजानी जि. बारा, पटेलनगर (बीरगंज) जि. पर्सा, मधुटार जि. सिंधुली, लालबंदी जि. सर्लाही, भैरहवा, जनकपुर आदि स्थानों में निःशुल्क होमियोपैथिक चिकित्सा शिविर लगाये गये और सत्संग, योग-प्रशिक्षण व नशामुक्ति कार्यक्रम किये गये।

बाढ़-राहत सेवाकार्य

प्रयागराज में आश्रम एवं 'युवा सेवा संघ' द्वारा बाढ़ प्रभावित क्षेत्र के लोगों को बिस्कुट, धान की लाई, चना, नमकीन व भोजन के पैकेट आदि राहत-सामग्री पहुँचायी गयी। (आ. पृ. ४)

अन्य सेवाकार्य

जम्मू में आश्रम द्वारा अमरनाथ-यात्रियों के लिए ३ जुलाई से १८ अगस्त तक सतत भंडारा चलाया गया। नंदूरबार (महा.) के सिंहस्थ पर्वणी में शोभायात्रा निकाली गयी और विशाल भंडारे का भी आयोजन किया गया।

दैवी कार्य में सहभागी हों

आप या आपके कोई परिचित अथवा मित्र, संबंधी वर्ष २०१७ का कैलेंडर या डायरी छपवा रहे हों तो उसमें १४ फरवरी को 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' तथा २५ दिसम्बर को 'तुलसी पूजन दिवस' अवश्य डलवायें। अपने क्षेत्र के प्रकाशकों, डीटीपी इकाइयों, संगठनों आदि को भी इनकी महत्ता बताकर इनका कैलेंडर आदि में समावेश करने के लिए कहें।

इस प्रकार अल्प प्रयास द्वारा आप भारतीय संस्कृति की रक्षा में सहभागी हो सकते हैं तथा समाज को सही दिशा देने के महापुरुषों के दैवी कार्य में सहभागी होने का पुण्यलाभ ले सकते हैं। छपवाने के बाद इस आईडी पर प्रतिपुष्टि (फीडबैक) भेजें feedback@rishiprasad.org

अहमदाबाद आश्रम के पवित्र आध्यात्मिक वातावरण में आयोजित

दीपावली विद्यार्थी अनुष्ठान शिविर

(३० अक्टूबर से ५ नवम्बर)

''विद्यार्थियों को गुरु-आश्रम में अनुष्ठान हेतु आने का जो अवसर मिलता है, यह बहुत भारी कल्याणकारी अवसर है।'' - पूज्य बापूजी

अनुष्ठान के दौरान श्री वासुदेवानंदजी और साध्वी रेखा बहन के प्रवचनों का लाभ मिलेगा। अनुष्ठान शिविर में बच्चों के साथ बड़े भी लाभ ले सकते हैं।

सूचना : 'बच्चों को अनुष्ठान हेतु अहमदाबाद नहीं लेकर जाना है'- ऐसी बातें फैलानेवालों से भ्रमित न हों। आश्रम, समितियाँ, बाल संस्कार सेवाधारी व साधक अपने क्षेत्र के मंत्रदीक्षित विद्यार्थियों को इस सुअवसर का लाभ अवश्य दिलवायें।

सम्पर्क : बाल संस्कार विभाग, अहमदाबाद आश्रम, दूरभाष : (०७९) ३९८७७७४९/८८.

ऋषि प्रसाद प्रश्नोत्तरी

नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तरों हेतु इस अंक को ध्यान से पढ़िये। उत्तर अगले अंक में प्रकाशित होंगे।

(१) जो प्रसन्नचित्त व पुरुषार्थी है, उसे ही .... मिलती है।

(२) शरीर में होते हुए भी .... करना यह बड़े-में-बड़ी बहादुरी है।

(३) .... माने हृदयरूपी घर में तीन बार साफ-सफाई।

(४) .... से पढ़ाई-लिखाई हो तो देश का, मानवता का यह सौभाग्य होगा।

अपने स्वरूप को जानो - संत पथिकजी

शुभ अवसर है तो यह है,
जो चाहो लाभ उठाओ।
यह व्यर्थ न जाने पाये,
निज को निर्दोष बनाओ॥
सत्संगति से गति मिलती, हितकर पुनीत मति मिलती।
सद्गुरु विवेक मिल जाता, उसको न कहीं ठुकराओ॥
दुःख से न डरो जीवन में, प्रभु का आश्रय धर मन में।
जो कर न सके थे अब तक,
वह भी करके दिखलाओ॥
जग के इन संयोगों में,
तुम रमो न प्रिय भोगों में।
तजकर वियोग का भय अब,
नित योग गीत तुम गाओ॥
अपने स्वरूप को जानो,
तन धन अपना मत मानो।
मोही बनकर आये थे,
प्रेमी होकर ही जाओ॥
इच्छाओं के त्यागी बन,
प्रभु के ही अनुरागी बन।
ऐ पथिक कहीं भी रहकर
तुम परमानंद मनाओ॥

साधना की ऊँचाइयों की यात्रा करानेवाला सत्साहित्य सेट

ईश्वर की ओर, मुक्ति का सहज मार्ग, समता साम्राज्य, श्राद्ध-महिमा, मन को सीख, शीघ्र ईश्वरप्राप्ति, परम तप, दैवी सम्पदा, निर्भय नाद, श्री ब्रह्मरामायण, आत्मगुंजन

इनमें आप पायेंगे : * सफलता की कुंजी क्या है ? * कलियुग में प्रभुप्राप्ति सुलभ कैसे ? * कमजोर मन को कैसे करें मजबूत ?
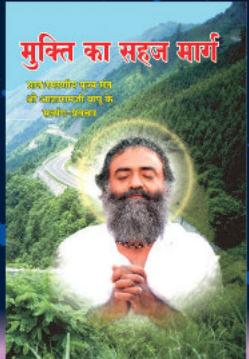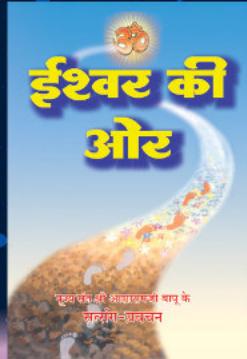
* श्राद्ध का विज्ञान - श्राद्ध करने से कैसे होते हैं पितर संतुष्ट ? * सुख-शांति व उत्तम संतति के अभिलाषी हर इंसान के लिए क्यों है श्राद्ध करना जरूरी ? * अपने पितरों की सद्गति कैसे करें ?
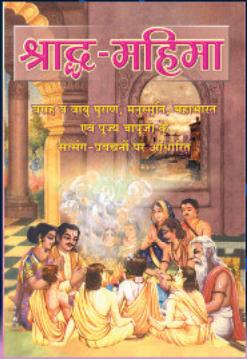
जिसे इसी जन्म में संसार से पार होना हो, वह 'ईश्वर की ओर' पुस्तक बार-बार पढ़े। - पूज्य बापूजी

सत्साहित्य सेट का मूल्य : ₹ १०० (डाक खर्च सहित)

साधना में चार चाँद लगानेवाली ५ डीवीडी का सेट

चतुर्मास में विशेषरूप से लाभ लें

इनमें आप पायेंगे : * कैसे बनायें कर्म को कर्मयोग ? * विवेक कैसे जगायें ?
* किसका सुख मिटता नहीं और दुःख टिकता नहीं ? * किसके लिए संसार तरना आसान है ?
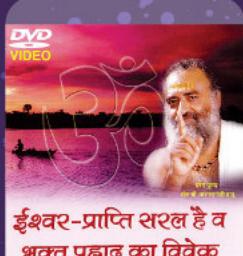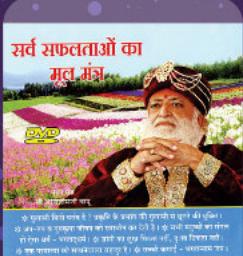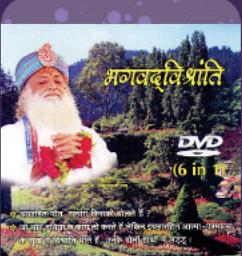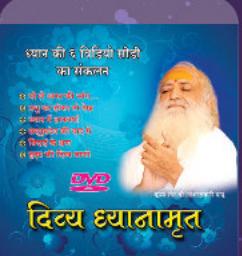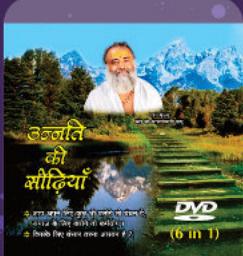
उन्नति की सीढ़ियाँ | दिव्य ध्यानामृत | भगवद्विश्रांति | सर्व सफलताओं का मूलमंत्र | ईश्वरप्राप्ति सरल है व भक्त प्रह्लाद का विवेक

डीवीडी सेट का मूल्य : ₹ ३०० (डाक खर्च सहित)

डायबिटीज टेबलेट

यह गोली मधुमेह (डायबिटीज), पीलिया, यकृत के विकार, रक्ताल्पता, कैंसर तथा कुष्ठ आदि रोगों में लाभदायी है। यह कृमि व कफ का नाश करनेवाली, अरुचि, मंदाग्नि, मलावरोध व आंत्रविकारों को हरनेवाली, रक्तशोधक, शोथहर, ज्वरनाशक व पित्तशामक है।

₹ ४०

उपरोक्त सत्साहित्य, डीवीडी सेट एवं उत्पाद आप अपने नजदीकी संत श्री आशारामजी आश्रम या समिति के सेवाकेन्द्र से प्राप्त कर सकते हैं। अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क : ०९२१८११२२३३ ई-मेल : hariomcare@gmail.com रजिस्टर्ड पोस्ट से मँगवाने हेतु सम्पर्क : (०७९) ३९८७७७३० ई-मेल : satsahityamandir@gmail.com

सरल घरेलू प्रयोग : खुजली, घमौरियाँ आदि होने पर नारियल-तेल में नींबू का रस समभाग मिलाकर २-३ बार लगा देने से लाभ होगा तथा दुष्प्रभाव (साइड इफेक्ट) करनेवाली एलोपैथिक दवाइयों, ट्यूबों से बचेंगे।

शुभ संकल्पों सहित बाँधे गये रक्षासूत्र

RNI No. 48873/91
RNP. No. GAMC 1132/2015-17
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2017)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/15-17
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2017)
Posting at Dehradun G.P.O.
between 4th to 20th of every month.
Date of Publication: 1st Sep 2016

डॉ. रमन सिंह, मुख्यमंत्री, छ.ग.

श्री बृजमोहन अग्रवाल, कृषि एवं जल संसाधन मंत्री, छ.ग.

गांधीनगर (गुज.) में सीआरपीएफ के जवानों को

गाजियाबाद (उ.प्र.) के कारागृह में

बिनका (ओड़िशा) के गुरुकुल में

भिलाई (छ.ग.) में एसएएफ के जवानों को

अमरावती (महा.) के मूक-बधिर विद्यालय में

राँची (झारखंड) के बाल-सुधारगृह में

स्वतंत्रता दिवस पर युवा सेवा संघ द्वारा निकाली गयीं देशभक्ति यात्राएँ

इंदौर (म.प्र.)

कल्याण, जि. ठाणे

बाड़मेर (राज.)

नागपुर

हैदराबाद

भुवनेश्वर

कानपुर (उ.प्र.)

कोलकाता

गाजियाबाद (उ.प्र.)

बेलौदी जि. दुर्ग (छ.ग.)

बेंगलुरु

बिलासपुर (छ.ग.)

युवा सेवा संघ द्वारा प्रयागराज में बाढ़-पीड़ितों हेतु राहत सेवाकार्य

सामग्री-वितरण

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।
आश्रम, समितियाँ एवं साधक-परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।